किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता

लेखक
सनी डेविड

सत्य-सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक

मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली- 110 049

ONE'S LIFE DOES NOT CONSIST IN THE ABUNDANCE OF THE THINGS HE POSSESSES

***by* SUNNY DAVID**

मुद्रक

Print India
A 38/2, Mayapuri
Phase-I, New Delhi-64

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक में बारह प्रवचन हैं, जिन्हें आरम्भ में रेडियो से प्रसारण के लिये लिखा गया था। उन्हीं प्रसारित प्रवचनों को अब पुस्तक का रूप देकर पेश किया जा रहा है। मेरी आशा है कि आप इन प्रवचनों को गम्भीरता के साथ पढ़ेंगे और वास्तव में यह जान लेंगे कि मनुष्य का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता। पर यदि हम परमेश्वर के सुसमाचार पर विश्वास लाकर उसकी आज्ञानुसार जीवन व्यतीत करेंगे, तो वह हमें स्वर्ग में एक ऐसा उत्तम और अनन्त जीवन देगा जो पृथ्वी पर के जीवन से कहीं अधिक बढ़कर है—जिसमें न शोक होगा, न विलाप होगा और न पीड़ा होगी और न मृत्यु होगी।

—लेखक

विषय सूची

पृष्ठ

1.मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति
2.किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की
बहुतायत से नहीं होता
3.अनन्त जीवन
4.शारीरिक जीवन और आत्मिक जीवन
5.अनन्त जीवन की बातें तो
तेरे ही पास हैं
6.मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य
7.परमेश्वर कहां है?
8.सच्चा उद्धारकर्त्ता
9.उनका सामना हम सबको करना पड़ेगा
10.अपने आप को बुद्धिमान जताकर
मूर्ख बन गए
11.यीशु कब, कहां, कैसे और क्यों आएगा?
12.प्रभु के सामने आप कहां खड़े होंगे?

सत्य सुसमाचार

मसीह यीशु के सुसमाचार
का कार्यक्रम
रेडियो पर सुनिए

प्रत्येक :

मंगलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार को
9 बजे रात में और रविवार को
दिन में 12:45 पर।

ये कार्यक्रम रेडियो श्रीलंका से 19, 25 और 41 मीटर बैंड पर सुने जा सकते हैं।

प्रस्तुतकर्त्ता
मसीह की कलीसिया

वक्ता
सनी डेविड

लगभग मुफ़्त!!

रेडियो प्रवचनों की बीस किताबें एक साथ प्राप्त कीजिए। केवल पन्द्रह रु. मनी आर्डर से भेजिए :

बाइबल टीचर
सी 22
साऊथ एक्स-2
नई दिल्ली-110 049

नोट : इसके बारे में अन्य लोगों को भी बताकर परमेश्वर के ससमाचार को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए।

मुनष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति

आज के इस वर्तमान संसार में लोगों के भीतर धन-सम्पत्ति एकत्रित करने की एक होड़ सी लगी हुई है। पैसा कमाने की धुन में आज का इन्सान ऐसा लीन है कि उसके पीछे और आगे उसे और कुछ दिखाई नहीं देता। बहुतेरे लोगों के जीवन का एकमात्र उद्देश्य ही पैसा कमाना बन गया है। रिश्ते-नाते और प्यार-महोब्बत और यहां तक कि अपने ज़मीर को भी आज इन्सान धन की बेदी के ऊपर बलिदान कर रहा है। रात-दिन लोग देश और अपने घर-बार को छोड़कर परदेस जा रहे हैं। एक बड़ी भारी संख्या में नकली चीज़ों का उत्पादन किया जा रहा है। नकली और ज़हरीली दवाइयां बनाई जा रहीं हैं। कुछ लोग हीरोइन और स्मैक जैसे जान लेवा नशीले पदार्थों को बेचकर पैसा कमा रहे हैं। घूस-खोरी और भ्रष्टाचार देश में हर जगह वर्तमान है। और ये सब काम लोग इसलिये कर रहे हैं क्योंकि वे कुछ अधिक पैसा कमाकर पृथ्वी पर अपने लिये कुछ धन-सम्पत्ति एकत्रित करना चाहते हैं। और मेरे विचार में इस उद्देश्य के पीछे एक जो मुख्य कारण है, वह है इन्सान की "चाहत" या "इच्छा"। जहां तक इन्सान की आवश्यकताओं या ज़रूरतों का प्रश्न है, वे कैसे न कैसे पूरी हो ही जाती हैं। प्रभु यीशु ने कहा था, कि "आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं न काटते हें, तोभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है। क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते?" (मत्ती 6 : 26)।

तन ढकने के लिये, सिर धरने के लिये, और पेट भरने के लिये परमेश्वर ने साधन बनाए हैं। उसने हमें हाथ-पैर और तन्दरूस्ती दी है ताकि हम अपने और अपने परिवारों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये काम कर सकें। हमारी आवश्यकताएं तो अवश्य ही पूरी हो जाती हैं, लेकिन हमारी इच्छाएं पूरी नहीं होतीं।

एक के बाद एक, किसी न किसी चीज़ की चाहत हमें लगी ही रहती है। यीशु ने सिखाया था, कि "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" (मत्ती 6 : 19-21)।

यहां विशेष रूप से ध्यान इस बात पर दें, कि प्रभु ने कहा था कि जहां तेरा धन होगा, वहीं तेरा मन भी लगा रहेगा। क्यों आज लोग इतने अधिक सांसारिक हैं? उनका मन क्यों अधिक से अधिक सांसारिक बातों पर ही लगता है। क्योंकि जहां तेरा धन है, वहां तेरा मन भी लगा रहेगा! तीन-तीन घन्टे सिनेमा हॉलों में बैठकर शांति के साथ वे फ़िल्म देख सकते हैं। अपने घरों में घंटों तक टी.वी. के सामने बैठकर प्रसन्नचित होकर कार्यक्रम देख सकते हैं। परन्तु परमेश्वर के वचन की बातों को सुनकर उन्हें नीन्द आने लगती है। जहां तेरा धन है, वहीं तेरा मन भी लगा रहेगा! पृथ्वी पर लोग धन-सम्पत्ति जोड़ रहे हैं। अपने रहने के लिये घर बनवा रहे हैं, जिन में शायद वे तीस या चालिस साल तक ही रह पाएंगे। पर जहां पर जाकर उन्हें हमेशा के लिये रहना होगा वहां के लिये उनके पास कोई तैयारी नहीं है।

पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "क्योंकि न हम जगत में कुछ लाए हैं, और न कुछ ले जा सकते हैं। और यदि हमारे पास खाने और पहिनने को है, तो इन्हीं पर संतोष करना चाहिए। पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा और फंदे में और बहुतेरी व्यर्थ और हानिकार लालसाओं में फंसते हैं जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं। क्योंकि रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से

भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है।" (1 तीमुथियुस 6 : 7-10)

पृथ्वी पर धन-सम्पत्ति एकत्रित करना हमारे जीवनों का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। और जो मनुष्य ऐसा करता है वह वास्तव में बड़ा ही मूर्ख है। क्योंकि जब हम इस ज़गत से जाएंगे तो हम वैसे ही खाली हाथ लौट जाएंगे जैसे हम आए थे। इसके विपरीत, हमें चाहिए, कि परमेश्वर की आज्ञा पर चलकर, जैसा वह चाहता है वैसा ही जीवन व्यतीत करके, हम स्वर्ग में आत्मिक धन एकत्रित करें ताकि जब हम यहां से वहां जाएं तो हम उसका लाभ उठा सकें। यह सच है, कि पृथ्वी पर हम सब के सब धनी नहीं बन सकते पर हम सब अपने आत्मिक धन को स्वर्ग में अवश्य एकत्रित कर सकते हैं। पवित्र बाइबल में लिखा है कि "तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।" (2 कुरिन्थियों 8 : 9)।

इस पृथ्वी पर आने से पहिले यीशु स्वर्ग में था। वह परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था। पृथ्वी पर मनुष्य और स्वर्ग में स्वर्गदूत उसकी महिमा, स्तुति और बड़ाई करते थे। पर वह उस सब को छोड़कर इस पृथ्वी पर आ गया, और एक इन्सान बना। उसने एक साधारण मनुष्य के जीवन को अपने ऊपर पहिन लिया। वह सताया गया था, लोग उस से घृणा करते थे. और उसे नाश करना चाहते थे, क्योंकि वह सच्चाई पर चलकर परमेश्वर की इच्छा से अपना जीवन व्यतीत करना चाहता था। पृथ्वी पर उसने अपने लिये कभी कुछ एकत्रित नहीं किया था। वह यहां एक गरीब और कंगाल था। हर तरह की परीक्षाएं उसके सामने आई थीं। लोग उसका निरादर करके उसे बुराई करने के लिये उकसाते थे। परन्तु बाइबल कहती है, कि उसने सब तरह की परिस्थितियों का

सामना करके ज़मीन पर एक ऐसा जीवन बिताया था जिसमें कोई भी पाप नहीं था। और फिर उस पाप-रहित इन्सान को कुछ लोगों ने अपनी ईर्ष्या के कारण क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला था। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने ऐसा होने दिया कि यीशु क्रूस पर लटकाकर मारा जाए, क्योंकि उसकी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर सारे जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित करना चाहता था।

आज, प्रभु यीशु मसीह की बलिदान-रूपी उस मृत्यु के कारण परमेश्वर ने हमें यह अधिकार दिया है कि यीशु के द्वारा अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके हम उसके स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं। वह हमारे लिये पृथ्वी पर कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल होने से हम सब स्वर्ग में धनी बन जाएं।

प्रभु यीशु ने कहा था, कि "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा? (मत्ती 16:26)। मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसकी आत्मा है। और यह एक ऐसी सम्पत्ति है जो हम सब के पास है। इस सम्पत्ति को हम सब को परमेश्वर ने दिया है। यह सम्पत्ति अविनाश है, अर्थात् इसका कभी अन्त नहीं होगा। केवल परमेश्वर ही इसका मूल्य सही रूप में जानता है, और वह हमें बताता है, कि यदि इन्सान सारे जगत को भी प्राप्त कर ले और अंत में नरक में अपनी आत्मा की हानि उठाए तो उसे कोई लाभ न होगा। इसीलिये, मनुष्य की इस आत्मिक सम्पत्ति को बचाने के लिये, परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को दे दिया ताकि उसके बलिदान से हम सब के पापों का प्रायश्चित हो जाए और हम पाप के कारण नाश होने से बच जाएं।

क्या आप अपनी इस आत्मिक सम्पत्ति को बचाना न चाहेंगे? प्रभु यीशु मसीह में विश्वास कीजिए कि वह आपके पापों

का प्रायश्चित करने को बलिदान हुआ था। उसने कहा था, कि जो विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा मैं उसका उद्धार करूंगा। (मरकुस 16 : 16)। अपना जीवन उसे सौंप दीजिए, तब वह आपकी ऐसी अगुवाई करेगा कि आप पृथ्वी पर की वस्तुओं की चिन्ता करना छोड़कर उन वस्तुओं की खोज में लग जाएंगे जो अनन्त जीवन तक ठहरती हैं। (यूहन्ना 6 : 27)।

किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता

आज मैं आप को एक ऐसे राजा के बारे में बताना चाहता हूं जिसका जीवन हर तरह के अनुभवों से परिपूर्ण था और जिसके जीवन से आज हम कुछ बड़ी ही महत्वपूर्ण शिक्षाएं ले सकते हैं। जिस राजा के बारे में आज मैं आप को बताने जा रहा हूं वह आज से लगभग तीन हज़ार वर्ष पूर्व हुआ था। और उस राजा का नाम था सुलैमान। कहा जाता है, कि बुद्धि और धन सुलैमान के पास इतनी बहुतायत से थे कि उसके समान कभी कोई दूसरा राजा नहीं हुआ। बाइबल में लिखा है, कि एक बार परमेश्वर ने सुलैमान को दर्शन देकर उस से पूछा था, कि जो कुछ तुझे चाहिए मांग और मैं तुझे दूंगा। लिखा है, कि सुलैमान ने परमेश्वर से कहा था कि तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिये समझने की ऐसी शक्ति दे कि मैं भले-बुरे को परख सकूं। तब इस बात से प्रभु ने प्रसन्न होकर उस से कहा था, "कि तू ने यह वरदान मांगा है, और न तो दीर्घायु और न धन और न अपने शत्रुओं का नाश मांगा है, परन्तु समझने के विवेक का वरदान मांगा है, इसलिये सुन, मैं तेरे वचन के अनुसार करता हूं, और तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूं, यहां तक कि तुझ से पहिले तेरे समान कभी कोई न हुआ, और न बाद में कोई कभी होगा। फिर जो तू ने नहीं मांगा, अर्थात् धन और महिमा, वह भी मैं तुझे यहां तक देता हूं, कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न होगा।" (1 राजा 3 : 10-13)।

सुलैमान के वैभव की चर्चा करके बाइबल कहती है, कि वह इतना अधिक शक्तिशाली हो गया था कि उसके आस-पास के देशों में जितने भी राजा थे वह उन सब पर भी प्रभुता करता था,

और उन राज्यों से उसके पास तरह-तरह की कीमती चीज़ें भेजी जाती थीं। उसके महल की रसोई में प्रतिदिन इतना ढेर खाना बनता था जिस से हज़ारों लोग खाते थे। और फिर लिखा है, कि "परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी, और उसकी समझ बहुत ही बढ़ाई, और उसके हृदय में समुद्र तट की बालू के किनकों के तुल्य अनगिनत गुण दिए।" और उसकी कीर्त्ती चारों ओर के सब राज्यों में फैल गई। उसने तीन हज़ार नीतिवचन और एक हज़ार पांच गीत लिखे। "और देश-देश के लोग पृथ्वी के सब राजाओं की ओर से, जिन्होंने सुलैमान की बुद्धि की कीर्ति सुनी थी, उसकी बुद्धि की बातें सुनने को आया करते थे।" (1 राजा 4 : 21-34)।

और अब मैं बाइबल में से 1 राजा की पुस्तक के दसवें अध्याय में से आप के सामने पढ़ूंगा जिस से आप यह देखेंगे कि सुलैमान वास्तव में कितना अधिक धनी और शक्तिशाली था। यहां हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि, "जो सोना प्रति वर्ष सुलैमान के पास पहुंचा करता था उसका तौल छः सौ छियासठ किक्कार था... और राजा सुलैमान ने सोना गढ़वाकर दो सौ बड़ी-बड़ी ढालें बनवाईं; और एक-एक ढाल में छः-छः सौ शेकल सोना था। फिर उस ने सोना गढ़वाकर तीन सौ छोटी ढालें भी बनवाईं, एक-एक छोटी ढ़ाल में, तीन माने सोना लगा था। और राजा ने उन्हें लबानोनी वन नाम के भवन में रखवा दिया। और राजा ने हाथी दांत का एक बड़ा सिंहासन बनवाया और उसे उत्तम कुन्दन से मढ़वाया। उस सिंहासन में छः सीढ़ियां थीं, और सिंहासन का सिरहाना पीछाड़ी की ओर गोल था, और बैठने के स्थान की दोनों अलंग टेक लगी थी, और दोनों टेकों के पास एक-एक सिंह खड़ा हुआ बना था। और सभी सीढ़ियों की दोनों अलंग एक-एक सिंह खड़ा हुआ बना था। और किसी राज्य में ऐसा कभी नहीं बना। और राजा सुलैमान के पीने के सब बर्तन सोने के बने थे, और लबानोनी

वन नाम भवन के सब पात्र भी चोखे सोने के थे, चांदी का कोई नहीं था। क्योंकि सुलैमान के दिनों में उसका कुछ लेखा नहीं था। इस प्रकार राजा सुलैमान धन और बुद्धि में पृथ्वी के सब राजाओं से बढ़कर हो गया। और सारी पृथ्वी के लोग उसकी बुद्धि की बातें सुनने को जो परमेश्वर ने उसके मन में उत्पन्न की थीं, सुलैमान का दर्शन पाना चाहते थे। और वे प्रति वर्ष अपनी-अपनी भेंट, अर्थात्, चांदी और सोने के पात्र,वस्त्र, शस्त्र, सुगन्ध द्रव्य, घोड़े और खच्चर ले आते थे। और सुलैमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिये, उसके चौहद सौ रथ, और बारह हज़ार सवार थे, और उन को उस ने रथों के नगरों में और यरुशलेम में राजा के पास ठहराया था। और बहुतायत के कारण राजा ने चांदी को ऐसा कर दिया था जैसे कि पत्थर।" (1 राजा 10 : 14-27)।

यहां हम ने बाइबल में से एक ऐसे आदमी के बारे में देखा है जिसके पास धन और बुद्धि दोनों ही बड़ी बहुतायत से थे। स्वयं सुलैमान अपने बारे में लिखकर एक जगह यूं कहता है कि मेरे मन ने जो चाहा और जितना चाहा उसे मैं ने अपने लिये प्राप्त कर लिया, और मैं ने अपना मन किसी प्रकार का आनन्द भोगने से न रोका। परन्तु अपने जीवन के अन्तिम दिनों में राजा सुलैमान ने लिखकर यूं कहा था, "कि सब कुछ व्यर्थ है और वायु को पकड़ने जैसा है।" (सभोपदेशक 1 तथा 2)। और फिर उसने कहा था कि इन्सान के लिये सबसे बड़ी और मुख्य बात यह है कि वह परमेश्वर का भय माने और उसकी सब आज्ञाओं का पालन करे, क्योंकि एक दिन सब को परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ेगा। (सभोपदेशक 12 : 13, 14)।

मेरे विचार में आज हम सब को सुलैमान के जीवन से यह सीखने की आवश्यकता है, कि मनुष्य का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता। हम पृथ्वी पर बहुत सी सम्पत्ति

इकट्ठी कर सकते हैं। ज़मीन, जायदाद, रुपया, टेपरिकॉर्डर, टेलीविज़न और अपने सुख की सभी अन्य चीज़ें हासिल कर सकते हैं। पर अन्त में पृथ्वी की कोई भी चीज़ हमारे काम नहीं आएगी और कोई भी चीज़ हमारे साथ नहीं जाएगी। विशेष बात इसलिये यह है, कि हम जगत की वस्तुओं की चिन्ता करना छोड़कर आज इस बात की ओर ध्यान दें, कि क्या हम अपने परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार हैं? वह परमेश्वर, जिसके सामने खड़े होकर हमें अपने-अपने जीवनों का लेखा देना होगा?

बाइबल में लिखा है कि, "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो : यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमन्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा।" (1 यूहन्ना 2:15-17)।

संसार की वस्तुओं से प्रेम न रखने का अर्थ है, उन में भरोसा न करना, उन के भीतर आस्था न रखना। जिस वस्तु से हम वास्तव में प्रेम करते हैं उसके लिये हम कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। यदि हम अपने मां-बाप से प्रेम रखते हैं तो हम उनके लिये कोई भी बलिदान कर देंगे, और अगर हम अपने बच्चों से प्रेम रखते हैं तो उनकी खुशी के लिये हम कुछ भी करने को तैयार हो जाएंगे। यानि जिनसे हम सचमुच प्रेम रखते हैं उनका हमारे जीवन में एक विशेष स्थान होता है। ऐसे ही यदि हम वास्तव में परमेश्वर से प्रेम रखेंगे, तो हमारे जीवन में उसका स्थान सबसे पहिला होगा। तब हम केवल वही काम करेंगे जिनसे वह प्रसन्न होता है। यदि हम वास्तव में परमेश्वर से प्रेम रखेंगे, तो हम उसका भय मानेंगे और उसकी

सब आज्ञाओं का पालन भी करेंगे।

किन्तु, आज आप के जीवन का क्या उद्देश्य है? खाना, पीना और ज़मीन पर बहुत सी चीज़ें इकट्ठी करना और फिर सब यहीं छोड़कर हमेशा के लिये चले जाना। क्या यही आप के जीवन का उद्देश्य है। क्या आप परमेश्वर से मिलने को तैयार हैं? यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं आप को बाइबल में लिखी ये बातें याद दिलाऊँ कि प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आप अपने आप को परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार कर सकते हैं। यदि आप उसमें विश्वास लाएंगे; यदि आप पाप से अपना मन फिराएंगे; यदि आप उसके नाम से अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे, और यदि आप उसके जीवन का अनुसरण करेंगे, तो अन्त में उसके द्वारा आप अनन्त जीवन पाएंगे। पृथ्वी पर की वस्तुएं केवल शारीरिक जीवन ही दे सकती हैं, जो केवल कुछ ही समय का होता है। पर आत्मिक जीवन प्रभु यीशु मसीह में है, और यह वह जीवन है जिसका अन्त कभी नहीं होगा।

अनन्त जीवन

प्रभु यीशु मसीह के सारे उपदेशों से एक बड़ी ही प्रमुख शिक्षा हमें यह मिलती है, कि पृथ्वी पर हमें एक ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहिए कि अन्त में हम अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकें। प्रभु ने सिखाया था, कि "यदि तेरा हाथ या तेरा पांव तुझे ठोकर खिलाए तो काटकर फेंक दे, टुन्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए। और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे। काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए।" (मत्ती 18 : 8-10)। इस से पहिले प्रभु यीशु ने नीकुदेमुस नाम के एक व्यक्ति से कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से प्रेम रखकर अपने एकलौते पुत्र को उसके लिये दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)।

इस से हम देखते हैं, कि परमेश्वर की दृष्टि में और प्रभु यीशु मसीह की दृष्टि में अनन्त जीवन का महत्व कितना बड़ा है। अनन्त जीवन हमें देने के लिये परमेश्वर ने एक ऐसा बड़ा बलिदान किया है कि उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिये दे दिया। और यीशु ने सिखाया था कि अनन्त जीवन को पाने के लिये या उसमें प्रवेश करने के लिये अगर हमें अपने शरीर के किसी अंग को भी खोना पड़े तो वह इससे भला है कि उस अंग के रहते हम अनन्त जीवन से वंचित रह जाएं।

यीशु ने दो ऐसे मार्गों के बारे में भी शिक्षा दी थी जो मनुष्य को या तो अनन्त विनाश या हमेशा के जीवन में पहुंचाते हैं। उसने कहा था, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक

और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती 7 : 13, 14)। अपने चेलों से प्रभु ने कहा था, कि, "सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे और न कर सकेंगे।" (लूका 13 : 24)। फिर एक बार जब एक अमीर आदमी यीशु के पास यह जानने के लिये आया था कि अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करुं? तो यीशु ने जवाब देकर उस से कहा था कि जो कुछ तेरा है उसे बेचकर कंगालों को दे दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, पर तू आकर मेरे पीछे हो ले।

किन्तु अनन्त जीवन क्या है? ऐसी क्या ख़ासियत है अनन्त जीवन में कि उसे हमें देने के लिये परमेश्वर को इतना बड़ा बलिदान देना पड़ा। और उसे प्राप्त करने के लिये हमें त्याग और यत्न करना ज़रूरी है।

"अनन्त" शब्द का अर्थ है वह जो अन्त के बिना है, जिसका कभी अन्त नहीं होगा, जो सदा और हमेशा वर्तमान रहेगा। और जो जीवन परमेश्वर हम सब को देना चाहता है वह जीवन, वह आत्मिक जीवन है जिसे उस ने आरम्भ में मनुष्य को दिया था, परन्तु मनुष्य ने उस जीवन को पाप करके खो दिया था। बिना सम्पर्क के जीवन असम्भव है। जीवन का मूलाधार ही सम्पर्क है। आत्मा के बिना देह मुर्दा है। जब तक एक पौधा ज़मीन में लगा है वह ज़िंदा है, पर उसे उखाड़कर फेंक दें, वह मर जाएगा। पानी में मछली जिवित है, पर उसे बाहर निकाल दीजिए कुछ ही समय बाद वह मर जाएगी। पृथ्वी पर जीतनी भी मोटर-गाड़ियें और मशीनें हैं वे सब उसी समय तक चलती हैं जब तक उनका सम्पर्क बना रहता है, परन्तु सम्पर्क टूटते ही वे बंद हो जाती हैं। यानि जहां

जीवन है वहां सम्पर्क है। सम्पर्क के बिना जीवन असम्भव है। आरम्भ में मनुष्य के पास आत्मिक जीवन था, क्योंकि उसका सम्पर्क परमेश्वर के साथ था। उस समय मनुष्य परमेश्वर की संगति में रहता था। वह उसी के समान पवित्र था। उसके पास परमेश्वर की ही तरह अनन्त जीवन था। परमेश्वर आत्मा है—और मनुष्य को उसने अपने स्वरूप पर बनाया था। परन्तु मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा पर न चलके उसके विरूद्ध पाप किया, और इस प्रकार उसका सम्पर्क परमेश्वर से टूट गया, और उस सम्पर्क के टूट जाने से उसका आत्मिक जीवन, जो उसका अनन्त जीवन था उस से छिन गया। पवित्र बाइबल के लेखक ने इस बात को यूं कहकर व्यक्त किया था कि "तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता। क्योंकि तुम्हारे हाथ हत्या से और तुम्हारी उंगलियां अधर्म के कामों से अपवित्र हैं; और तुम्हारे मुंह से तो झूठ और तुम्हारी जीभ से कुटिल बातें निकलती हैं।" (यशायाह 59 : 2, 3)।

सो हम यह देखते हैं कि परमेश्वर की बाइबल हमें यह बताती है कि पाप के कारण इन्सान में वह जीवन नहीं है जिसके साथ आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था। उसके पास अब केवल नाशमान शारीरिक जीवन है, परन्तु वह अनन्त जीवन नहीं है जिसके लिये परमेश्वर ने उसे सृजा था। मान लीजिए आप बाज़ार जाकर एक बहुमूल्य हीरे की अंगूठी मोल लाते हैं। दुकानदार उस कीमती अंगूठी को आपको एक सुंदर से बक्से के भीतर रखकर देता है। अब घर आकर आप उस बक्से को यूं ही इधर-उधर नहीं फेंक देंगे। पर आप उसे किसी सुरक्षित स्थान पर रखेंगे। शायद आप उसे किसी मज़बूत अलमारी में रखकर ताले में बन्द कर देंगे, या हो सकता है आप उसे किसी बैंक के लॉकर में

जमा करवा देंगे। क्योंकि आप उस अंगूठी की कीमत से परिचित हैं, आप उसका मूल्य जानते हैं। लेकिन मान लीजिए, कुछ समय बाद आप उस अलमारी को खोलकर उस में से उस बक्से को निकालते हैं। फिर आप उस बक्से को खोलते हैं, लेकिन बक्से के खुलते ही आप को एक बड़ा शॉक लगता है यह देखकर कि उस में से अंगूठी गायब है। अब आप उस बक्से का क्या करेंगे? क्या आप उसे ताले में बन्द करेंगे? क्या आप पहिले ही की तरह उसकी सुरक्षा और चौकसी का प्रबन्ध करेंगे? क्या वह बक्सा आप के लिये एक कीमती चीज़ होगी? नहीं। क्यों? क्योंकि आप उस बक्से और उस हीरे की अंगूठी में अन्तर को पहिचानते हैं। आप जानते हैं कि आपने उस बक्से की कीमत नहीं परन्तु उस अंगूठी की कीमत चुकाई थी। वह बक्सा अब आपके लिये उतना महत्व नहीं रखता जितना कि उस वक्त रखता था जब उसके भीतर वह कीमती अंगूठी थी।

इसी प्रकार, परमेश्वर भी मनुष्य की आत्मा के महत्व को पहिचानता है। वह जानता है, कि इन्सान की सुंदर देह तो केवल मिट्टी ही है जो एक दिन मिट्टी में ही मिल जाएगी, परन्तु आत्मा जो मनुष्य के भीतर है वह एक बड़ी ही बहूमूल्य वस्तु है। क्योंकि मनुष्य की आत्मा परमेश्वर का स्वरूप है। वह उसकी ही तरह अनन्त है। और जिस प्रकार वह सदा वर्तमान रहेगा वैसे ही मनुष्य भी आत्मिक रूप में सदा वर्तमान रहेगा। परन्तु पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग है। और यदि वह ऐसी ही स्थिति में इस जगत से चला जाएगा तो वह हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग होकर नरक में रहेगा। इसी कारण से परमेश्वर ने यीशु मसीह को जगत में भेज दिया, ताकि उस धर्मी जन की मृत्यु से सारे जगत के पापों का प्रायश्चित हो जाए, और हम सब उसमें होकर परमेश्वर के निकट धर्मी हो जाएं। वह परमेश्वर की इच्छा से हम सब के

लिये मर गया ताकि उस की मौत से हम सब को ज़िन्दगी मिल जाए। और जो जीवन हमें उस से मिलता है वह अनन्त जीवन है। यदि आज हम उसके द्वारा परमेश्वर के साथ मेल कर लेते हैं तो हम अनन्त जीवन के अधिकारी बन जाते हैं, लेकिन अगर कोई ऐसा नहीं करता है तो वह हमेशा उस से अलग रहेगा—और यही अनन्त मृत्यु है। यही नरक है।

प्रभु यीशु ने कहा था "जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है; जिसने परमेश्वर की प्रतीति नहीं की, उस ने उसे झूठा ठहराया है; क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है। और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है : और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिस के पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।" (1 यूहन्ना 5:10-22)। क्या वह जीवन आज आप के पास है?

शरीरिक जीवन और आत्मिक जीवन

आज अपने पाठ में हम मनुष्य के दो जीवनों के बारे में देखेंगे। हर एक इंसान पृथ्वी पर दो जीवनों को लेकर आता है। उसका एक जीवन शारीरिक होता है, दूसरा आत्मिक होता है। शारीरिक जीवन का सम्बन्ध शरीर से है, जबकि आत्मिक जीवन का सम्बन्ध आत्मा से है। शारीरिक जीवन मनुष्य को मनुष्य से मिलता है, परन्तु आत्मिक जीवन उसे परमेश्वर देता है। जबकि प्रत्येक मनुष्य का जन्म इन दोनों ही जीवनों के साथ होता है, तौभी ये दोनों जीवन एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। और अपने आज के पाठ में हम इसी बात के ऊपर विचार करेंगे कि मनुष्य के इन दो जीवनों में क्या विशेष अन्तर है।

सबसे पहिले मनुष्य के शारीरिक जीवन के सम्बन्ध में हम यह बात देखते हैं, कि वह पृथ्वी का है, उसे मिट्टी में से निकाला गया है। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर ने पहले इन्सान यानि आदम को भूमी की मिट्टी से बनाया था। (उत्पत्ति 2:7)। और जब आदम ने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर पाप किया था, तो परमेश्वर ने उस से कहा था, कि तू अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा, क्योंकि तू उसी में से निकला गया है और उसी में फिर मिल जाएगा। (उत्पत्ति 3:19)। फिर, सभोपदेशक की पुस्तक का लेखक मनुष्य की मृत्यु को सम्बोधित करके कहता है, कि तब मिट्टी ज्यों कि त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास, जिसने उसे दिया है लौट जाएगी। (सभोपदेशक 12:7)। लैबरोटरी टेस्ट के द्वारा यह देखा गया है कि मनुष्य की देह में कम-से-कम चौदह ऐसे पदार्थ हैं जिनका सम्बन्ध भूमी से है। परन्तु जबकि मनुष्य के शारीरिक जीवन का सम्बन्ध मिट्टी से है, उसके आत्मिक जीवन का सम्बन्ध परमेश्वर से है। इसी कारण से

बाइबल का लेखक कहता है कि मृत्यु के समय शरीर मिट्टी में मिल जाएगा, पर आत्मा परमेश्वर के पास लौट जाएगी।

जब परमेश्वर ने आरम्भ में आदम को बनाया था, तो बाइबल हमें बताती है, कि, आदम को भूमि की मिट्टी से बनाने के बाद परमेश्वर ने उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंका था। परमेश्वर स्वयं आत्मा है। वह हमारी तरह भूमि की मिट्टी से बना हुआ नहीं है। (यूहन्ना 4:24)। उसके पास आत्मिक जीवन है, और उसी आत्मिक जीवन के श्वास को उसने आरम्भ में मनुष्य के भीतर फूंका था। इसी सम्बन्ध में बाइबल एक और बात हमें यह बताती है कि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप पर और अपनी समानता पर बनाया था। सो इन्सान शारीरिक दृष्टिकोण से तो मनुष्य है, लेकिन आत्मिक दृष्टिकोण से वह परमेश्वर का स्वरूप है। मनुष्य के इस दोहरे व्यक्तित्व पर विचार करके हमें प्रभु यीशु की वह बात भी याद आ जाती है, जैसे कि उसने कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी से ही ज़िन्दा नहीं रह सकता। (मत्ती 4:4)। शारीरिक रूप से ज़िन्दा रहने के लिये मनुष्य को रोटी की आवश्यकता होती है। परन्तु आत्मिक जीवन उसे केवल परमेश्वर के सम्पर्क में रहकर ही मिलता है।

जिस समय आरम्भ में परमेश्वर ने आदम को बनाया था, तो उसके पास उस वक्त शारीरिक जीवन भी था और आत्मिक जीवन भी था। परन्तु जब उसने परमेश्वर की आज्ञा न मानकर पाप किया था, तो परमेश्वर से उसका सम्पर्क टूट गया था, इसीलिये बाइबल कहती है कि परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके आदम और हव्वा दोनों मर गए थे। क्योंकि परमात्मा से उनका सम्पर्क टूट गया था। आत्मा तो उनके पास थी पर आत्मिक जीवन उनके पास नहीं था। ऐसे ही जब एक छोटे बच्चे का जन्म होता है तो वह आरम्भ में आदम की ही तरह शारीरिक और

आत्मिक दोनों जीवनों के साथ उत्पन्न होता है। क्योंकि हरएक इंसान को जीवन परमेश्वर से ही मिलता है, और वह किसी को पापी जीवन के साथ उत्पन्न नहीं करता है। एक छोटा बालक वैसे ही पवित्र और निषकलंक होता है जैसे कि आरम्भ में आदम था। यही सबब है, कि क्यूं प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि जब तक तुम छोटे बालकों के समान न बनोगे तो तुम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करोगे, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। (मत्ती 18:3; 19:14)।

मनुष्य के दोहरे व्यक्तित्व को हम इस बात में भी देखते हैं, कि जबकि वह अपने शरीर को स्वस्थ और सुंदर बनाए रखने के लिये अनेक प्रकार के साधन जुटाता है, दूसरी ओर उसके भीतर एक आत्मिक जागृति है, एक आत्मिक भूख है। सो वह अपनी आत्मा के लिये भी कुछ करना चाहता है—जिन्हें इन्सान "धर्म के काम" कहता है। फिर, वह परमेश्वर या परमात्मा की आराधना भी करना चाहता है। यह भी एक आत्मिक काम है। ऐसे-ऐसे सब कामों को करके इन्सान परमेश्वर के निकट आना चाहता है। परन्तु फिर भी वह अपना जीवन पाप और अधर्म में ही रहकर व्यतीत करता है। अर्थात इस दोहरे व्यक्तित्व में रहते हुए इन्सान पाप से नहीं बच सकता। दिन में शायद वह दो—चार धर्म के काम करले, लेकिन फिर भी कहीं-न कहीं चूक जाता है। इसीलिये बाइबल कहती है, कि पृथ्वी पर कोई भी इन्सान धर्मी नहीं है। (रोमियों 3:10)।

लेकिन जब परमेश्वर ने आरम्भ में पाप के कारण आदम और हव्वा को अदन के घर से निकाला था। तो उनके सामने परमेश्वर ने शैतान से कहा था, कि जिस स्त्री को तू ने पाप करने के लिये बहकाया है, एक दिन उसी का वंश तेरे सिर को कुचल डालेगा। और यह बात उस समय पूरी हुई थी जब परमेश्वर का

पुत्र, यीशु मसीह, जो एक स्त्री से उत्पन्न हुआ था, क्रूस पर चढ़ाया गया था। उसने शैतान के साथ ऐसी लड़ाई की थी कि उसने अपना खून बहा दिया था लेकिन वह उसके सामने झुका नहीं था। उसने अपने सारे जीवन में एक भी पाप नहीं किया था। उसके सामने हर एक तरह की परीक्षाएं आई थीं, शैतान ने उसे हर एक बात से परखा था, बड़े-बड़े लालच उसके सामने रखे थे। उसके मुंह पर लोगों से थुकवाया था, उसे सब प्रकार की गालियां दिलवाईं थीं उसे घूंसों और लातों से पिटवाया था। यानी उसे हर प्रकार से निरादर करके उसे बिना किसी दोष के क्रूस पर मृत्यु का दन्ड तक दिलवाया था। लेकिन परमेश्वर के पुत्र ने सब कुछ परमेश्वर की इच्छा जानकर सह लिया था। उसने अपनी जान तक दे दी थी, लेकिन एक भी पाप नहीं किया था।

इसीलिये बाइबल कहती है, कि यद्यपि उसमें स्वयं तो कोई पाप नहीं था परन्तु परमेश्वर ने उसे हमारे लिये पाप बना दिया था, ताकि उसके भीतर होकर हम सब परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाएं। (2 कुरिन्थियों 5:21)। यीशु ने क्रूस के ऊपर अपनी मौत के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित किया था। यीशु इन्सान को फिर से उस आत्मिक जीवन को देने को आया था जिसे मनुष्य ने पाप करके खो दिया था। उसने कहा था, कि मैं इसलिये आया हूं कि तुम जीवन पाओ और बहुतायत से पाओ। (यूहन्ना 10:10)। बाइबल कहती है कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" इसलिये, बाइबल में लिखा है कि "जो पुत्र पर विश्वास रखता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यहन्ना 3:16, 36)। प्रभु यीशु ने स्वयं यह कहा था, कि "जो मेरा

वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दन्ड की आज्ञा नहीं होती है, परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" (यूहन्ना 5:24)।

यहां प्रभु ने जिस मृत्यु के बारे में कहा है, वह नरक की अनन्त मृत्यु है, और जिस जीवन के बारे में उस ने यहां कहा है, वह स्वर्ग का अनन्त जीवन है। पवित्र बाइबल कहती है, कि न्याय के दिन सारे अधर्मी नरक में अनन्त दन्ड भोगेंगे, परन्तु सारे धर्मी परमेश्वर के स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएंगे। और उसी अनन्त जीवन को हम सब को देने के लिये प्रभु यीशु जगत में आया था। क्या आपने उस जीवन को पा लिया है?

यीशु ने कहा था, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती 11:28)।

क्या आज आप अपना मन फिराकर उसके पास आएंगे?

अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं

बाइबल अध्ययन में आज मैं आप का ध्यान नए नियम में से यूहन्ना की पुस्तक के छठे अध्याय पर दिलाना चाहूंगा। इसमें हम यह पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु मसीह ने एक बहुत बड़ी भीड़ को भोजन खिलाया था। अब शायद आप कहें, कि यह तो कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि अकसर शादियों वगैरह में लोगों की भीड़ को खाना खाते देखा जा सकता है। पर बात यह है कि यहां इस कहानी में हमें ऐसा नहीं मिलता। यहां हम एक बड़ी ही विचित्र और आश्चर्यपूर्ण बात देखते हैं। यहां लिखा है, कि एक बहुत बड़ी भीड़ यीशु के आश्चर्यकर्मों को देखकर उसके पीछे हो ली थी। और उन लोगों की गिनती लगभग पांच हज़ार की थी। और यीशु उन लोगों को भोजन खिलाना चाहता था, क्योंकि वे लोग सारे दिन के भूखे प्यासे उसके पीछे चल रहे थे। उन लोगों में से सिर्फ एक लड़के को छोड़कर और किसी के पास भी खाने को कुछ नहीं था। उस लड़के के पास पांच रोटियां थीं और दो छोटी-छोटी मछलियां थीं। किन्तु, यीशु ने उस लड़के से उसके भोजन को मांग लिया और लोगों को बैठ जाने को कहा। तब यीशु ने उन पांच रोटियों और दो मछलीयों को हाथ में लेकर उनके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया। और अपने चेलों से कहा, कि अब इस भोजन को सब लोगों में बांट दो। यह सुनकर चेले आश्चर्यचकित थे। और वे सब लोग भी आश्चर्यचकित थे। परन्तु जब उन्होंने यीशु की आज्ञा मानकर उसे बांटना आरम्भ किया तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। क्योंकि जैसे-जैसे वे उसे बांटते थे वह भोजन और अधिक होता जाता था। और यहां तक, कि कुछ समय बाद जब सब लोग खाकर छक गए तो बचे हुए भोजन के टुकड़ों के बारह टोकरे भरके उठाए गए!

इसके बाद यीशु और उसके चेले वहां से चले गए। लेकिन लिखा है, कि दूसरे दिन लोगों की वही भीड़ यीशु को ढूंढ़ती हुई फिर वहां आ पहुंची। किन्तु जब उन्होंने वहां प्रभु यीशु को नहीं पाया तो वे उसे ढूंढ़ते हुए कफरनहूम में पहुंच गए, और वहां यीशु को पाकर उससे पूछा, कि हे गुरू तू यहां कब आ गया? यीशु ने उन से कहा, "कि मैं तुम से सच-सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो, कि तुम ने अचम्भित काम देखे थे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए थे। पर नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है।" (यूहन्ना 6:26, 27)।

प्रत्यक्ष ही है, कि यह सब कुछ सुनकर उन्हें अच्छा नहीं लगा होगा। क्योंकि वे उसके पास उसकी बातें सुनने के लिये नहीं आए थे, पर अपना पेट भरने को आए थे। वे उसके पास किसी आत्मिक उद्देश्य से नहीं, परन्तु शारीरिक उद्देश्य से आए थे। पर यीशु उनका ध्यान शरीर पर से हटाकर आत्मा पर दिलाना चाहता था। वह उन्हें शारीरिक जीवन की चिन्ता करना छोड़कर आत्मिक जीवन की चिन्ता करना सिखाना चाहता था। इसलिये उस ने उन से कहा, कि "जीवन की रोटी मैं हूं: और जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करेगा वह कभी पियासा न होगा।" "मैं तुम से सच कहता हूं" यीशु ने कहा था, "कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है। जीवन की रोटी मैं हूं। तुम्हारे बाप-दादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है, ताकि मनुष्य उसमें से खाए और न मरे। जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी है, वह मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए तो सर्वदा जीवित रहेगा, और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा वह मेरा मांस है।" (यूहन्ना 6:47-51)।

यीशु की ये बातें सुनकर, लिखा है, वे लोग आपस में कहने लगे कि यह आदमी कैसी अजीब बातें कर रहा है। हम तो यहां रोटी खाने आए थे, परन्तु यह कह रहा है कि मैं असली रोटी हूं, मुझे खाओ। और मैं अपना मांस सब को खाने के लिये दूंगा और उस से सब को जीवन मिलेगा। उन्होंने कहा ये बातें कौन ग्रहण कर सकता है—ये बातें मानने योग्य नहीं हैं। और तब लिखा है, कि वे लोग क्रोध से भरकर सब के सब वहां से वापस चले गए।

किन्तु, उन सबको वापस जाते देखकर यीशु ने अपने बारह चेलों की ओर देखा और उन से कहा, कि ये बातें सुनकर, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" किन्तु, उन में से एक ने जवाब देकर उस से कहा, कि, "हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।" (यूहन्ना 6:67, 68)।

वे सब लोग, जो उसे छोड़कर चले गए थे, वे इस महान सच्चाई से अपरिचित थे, कि अनन्त जीवन की बातें केवल यीशु के ही पास हैं। वे उसे केवल एक आश्चर्यकर्म करनेवाला ही समझते थे। उन्होंने उसके उपदेशों की गहराई में जाने की कोशिश ही नहीं की थी, और उन्होंने उस से यह जानना नहीं चाहा था कि उसकी गूढ़ बातों का अर्थ क्या है। उन्हें उसमें कोई रुचि नहीं थी, वे केवल शारीरिक लाभ के लिये ही उसके पास आए थे। वे उसके उपदेशों को सुनने के अभिलाषी नहीं थे। वे तो केवल उसके आश्चर्यकर्मों को देखना चाहते थे। ऐसे ही लोग क्या आज भी दुनिया में नहीं हैं? वे केवल यीशु की तस्वीर अपने घर में लगाना चाहते हैं, या अपने गले में एक क्रूस का निशान लटकाना चाहते हैं। वे उसका नाम धारण करके शायद कुछ शारीरिक लाभ उठाना चाहते हैं। पर उसके नाम से जो कुछ भी वे करते हैं उसके पीछे उनका कोई न कोई शारीरिक उद्देश्य होता है। उसकी शिक्षाओं से उन्हें कोई लगाव नहीं है, कोई मतलब नहीं है। ऐसे

लोग कभी भी उसका इन्कार कर सकते हैं, और उसे छोड़कर जा सकते हैं।

पर यीशु के चेलों ने उस से कहा था कि अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। हम तुझे छोड़कर किसके पास जाएं? बहुतेरे ऐसे लोग हैं आज जिन्होंने कुछ मनुष्यों को अपना ईश्वर बना रखा है। वे उनके पास जाते हैं, उनकी बातों को मानते हैं; उन्हें पूजते हैं, और उन्हें "भगवान" कहते हैं। बहुतेरे पत्थरों और पेड़ों के पास और जगत की अन्य नाशमान वस्तुओं के पास जाते हैं। क्योंकि वे उस भीड़ के उन लोगों की तरह इस सच्चाई से अनजान है, कि अनन्त जीवन की बातें तो केवल यीशु के ही पास हैं। केवल वही मनुष्य को जीवन दे सकता है। सिर्फ वही इन्सान का मेल परमेश्वर से करवा सकता है। क्योंकि केवल उसी ने सारे जगत के लोगों के पापों की छुड़ौती के लिये अपने आपको बलिदान किया था। उसने सारी दुनिया के लोगों के पापों को धोने के लिये अपने लोहू को बहाया था। क्रूस पर लटका हुआ उस का मांस जगत के अनन्त जीवन के लिये रोटी ठहरा था। परमेश्वर ने हम सब के पापों का बोझ उसके ऊपर लाद दिया था। उसने परमेश्वर की ही मर्ज़ी से सारे जगत के अपराधों को और सारी दुनिया के गुनाहों को और सब लोगों के दोषों को अपने ऊपर उठा लिया था। वह सब गुनहगारों के लिये मरा था। और इसी कारण से, जब हम उसके ऊपर विश्वास लाकर अपने सब पापों से मन फेर लेते हैं, और उसे अपना उद्धारकर्त्ता मान लेते हैं और उसकी आज्ञाओं पर चलने लगते हैं, तो हम उसमें होकर अपने पापपूर्ण जीवन के लिये मर जाते हैं। और तब हम एक नए इन्सान बन जाते हैं।

पवित्र बाइबल कहती है, "सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं।" (रोमियों 8:1) क्योंकि वे मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं। (यूहन्ना 5:24)। वे अपने

पापों का दन्ड नहीं पाएंगे, परन्तु परमेश्वर के साथ स्वर्ग में अनन्त जीवन पाएंगे।

क्या आप भी इस नए जीवन को पहिनना न चाहेंगे? यीशु के पास अनन्त जीवन की बातें हैं। वह आप को अनन्त जीवन दे सकता है।

उसमें विश्वास कीजिए, कि वह आपके पापों के लिये मरा था। और बुराई से अपना मन फेरकर अपने सब पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञा मानकर बपतिस्मा लीजिए। (मरकुस 16:16)। यदि आज आप अपना जीवन उसे दे देंगे तो वह आप के जीवन को लेकर उसे नया बना देगा। वह आप को एक ऐसा जीवन दे देगा जिस में आशा होगी—अनन्त जीवन की आशा!

मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य

जब कि मुझे यह अवसर दिया गया है कि मैं आप सब का ध्यान परमेश्वर के पवित्र वचन की पुस्तक पर दिलाऊं, तो इस समय मैं आप के सामने बाइबल में से सभोपदेशक की पुस्तक के बाहरवें अध्याय में से पढ़ूंगा, जहां बुद्धिमान लेखक जीवन की वास्तविकताओं पर हमारा ध्यान दिलाकर कहता है, कि पृथ्वी पर मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यह है, कि वह परमेश्वर का भय माने और उसकी आज्ञाओं का पालन करे।

यहां लेखक इस प्रकार कहता है, कि "हे जवान," "अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इस से पहिले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिन में तू कहे कि मेरा मन इन में नहीं लगता। इस से पहिले कि सूर्य और प्रकाश और चन्द्रमा और तारागण अंधेरे हो जाएं, और वर्षा होने के बाद बादल फिर घिर आएं। उस समय घर के पहरुए कांपेंगे, और बलवन्त झुक जाएंगे, और पीसनहारियां थोड़ी रहने के कारण काम छोड़ देंगी, और झरोखों में से देखनेवालियां अन्धी हो जाएंगी, और सड़क की ओर के किवाड़ बन्द होंगे, और चक्की पीसने का शब्द धीमा होगा, और तड़के चिड़िया बोलते ही एक उठ जाएगा, और सब गानेवालियों का शब्द धीमा हो जाएगा। फिर जो ऊंचा हो उस से भय खाया जाएगा, और मार्ग में डरावनी वस्तुएं मानी जाएंगी; और बादाम का पेड़ फूलेगा, और टिड्डी भी भारी लगेगी, और भूख बढ़ानेवाला फल फिर काम न देगा; क्योंकि मनुष्य अपने सदा के घर को जाएगा, और रोने पीटनेवाले सड़क-सड़क फिरेंगे। उस समय चांदी का तार दो टुकड़े हो जाएगा और सोने का कटोरा टूटेगा, और सोते के पास घड़ा फूटेगा, और कुन्ड के पास रहट टूट जाएगा। तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और

आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया है लौट जाएगी।" इसलिये, "उपदेशक कहता है, सब व्यर्थ ही व्यर्थ; सब कुछ व्यर्थ है।" और फिर वह कहता है कि सब बातों का निचोड़ यह है, "कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।"

परमेश्वर का उपदेशक यहां हमारा ध्यान एक बड़ी ही खास बात पर दिला रहा है, और वह खास बात यह है, कि एक दिन परमेश्वर जगत के सारे लोगों का न्याय करेगा। इसलिये, वह कहता है, कि मनुष्य के जीवन का सार यही है, कि वह परमेश्वर का भय माने और अपना जीवन उसकी आज्ञाओं पर चलकर बिताए। इन्सान जब जवान होता है, तो उसमें ताकत होती है। उस समय वह चल-फिर सकता है, भाग-दौड़ सकता है। उस वक्त उसके खून में गर्मी होती है; वह अच्छी तरह देख सकता है, अच्छी तरह सुन सकता है। यह वह समय होता है जबकि मनुष्य अपने जिस्म को पूरी तरह से परमेश्वर की महिमा के लिये इस्तेमाल कर सकता है। पर अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रखकर उसकी महिमा करने के विपरीत, मनुष्य अपनी जवानी के दिनों में ऐसे-ऐसे काम करता है जिन से उस पवित्र और धर्मी का, जिस ने मनुष्य को बनाया है, निरादर होता है। अकसर लोग सोचते हैं, कि जवानी के दिनों में इन्सान को हरएक वह काम करना चाहिए जो उसका मन करता है। वे कहते हैं कि जवानी बार-बार नहीं आती, इसलिये जितनी मौज उड़ाना चाहो उड़ा लो; परमेश्वर को तो बुढ़ापे में भी याद कर लेंगे। वे जवानी को स्वयं अपने ही लिये इस्तेमाल करना चाहते हैं, और परमेश्वर को अपना शक्तिहीन मुरझाया हुआ बुढ़ापा पेश करना

चाहते हैं। ऐसा करना बिल्कुल इस तरह की बात है जैसे किसी को मुरझाए हुए सूखे फूलों का गुलदस्ता पेश किया जाए। उपदेशक इसलिये कहता है, कि अपनी जवानी के दिनों में तू अपने सृजनहार को याद कर, इस से पहिले, कि बुढ़ापे की विपत्ति के वे दिन आएं जब तू कहे कि अब मेरा मन इन सब बातों में नहीं लगता। जवानी के दिनों में इन्सान बहुत कुछ काम करता है, पर बुढ़ापे में आकर वह ठंडा पड़ जाता है। अब उन कामों में उसे आनन्द नहीं मिलता। उसके शौक और उसकी चाहतें सब खत्म हो जाते हैं, अब वह केवल लेटना चाहता है। उसके सूरज, चांद, सितारे सब अंधेरे हो जाते हैं, क्योंकि उसकी आंखों की रौशनी कम हो जाती है; अब वह ठीक से देख नहीं सकता, ठीक से पढ़ नहीं सकता। और जिस प्रकार बरसात में वर्षा होने के बाद बादल फिर घिर आते हैं, वैसे ही बुढ़ापे में इन्सान के ऊपर एक के बाद एक दुख आने लगते हैं। उस समय उसके देह रूपी घर के पहरूए, यानी उसकी टांगे कांपने लगती हैं, और बलवन्त झुक जाते हैं, यानि कमर में शक्ति न रहने के कारण बुढ़ापे में लोग झुककर चलने लगते हैं। फिर उपदेशक कहता है, कि पीसनहारियां, अर्थात् दांत, जिन से जवान चबा-चबाकर खाता है, थोड़ी रहने के कारण काम छोड़ देंगी। और झरोखों में से देखनेवालियां यानि आंखे अन्धी हो जाएंगी। और वह कहता है कि बुढ़ापे के समय सड़क की ओर किवाड़ बन्द होंगे और चक्की पीसने का शब्द धीमा होगा। यानि बुढ़ापे में दांत कम रह जाते हैं, और भोजन मुंह बन्द करके धीमे-धीमे खाया जाता है। बूढ़े लोग रात को नींद का आनन्द भी ठीक से नहीं ले पाते, क्योंकि कभी दर्द होता है तो कभी खांसी होती है, इसीलिये वह कहता है, कि वह तड़के चिड़िया बोलते ही उठ जाएगा। ऊंचे से भय खाएगा और मार्ग में डरावनी वस्तुएं मानी जाएंगी, अर्थात् बुढ़ापे में ऊंची जगहों पर चढ़ना कठिन हो जाता है और शरीर कमजोर होने के

कारण और आंखों से कम दिखने के कारण मार्ग में चलने से भय लगता है। फिर उपदेशक कहता है, कि उस समय बादाम का पेड़ फूलेगा, यानी काले बाल, सफेद हो जाएंगे, और टिड्डी भी भारी लगेगी, यानी थोड़ा सा वजन भी बहुत भारी महसूस होगा। और भूख बढ़ानेवाला फल फिर काम न करेगा, यानी ज़्यादा खाया नहीं जाएगा। क्योंकि यह वह समय होगा, उपदेशक कहता है, जबकि मनुष्य अपने सदा के घर को जाने को तैयार होगा। तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा उस परमेश्वर के पास लौट जाएगी जिसने उसे आरम्भ में मनुष्य को दिया था।

क्योंकि परमेश्वर सब मनुष्यों के सब कामों और गुप्त बातों का चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा। इस कारण, उपदेशक कहता है, कि पृथ्वी पर हर एक इन्सान का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है कि वह परमेश्वर का भय मानकर चले और उसकी आज्ञाओं का पालन करे। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने यह नियुक्त किया है कि हर एक इन्सान एक बार मरेगा और फिर उसका न्याय किया जाएगा।

सो अपने आज के पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि मनुष्य का जीवन इस पृथ्वी पर कुछ ही समय का है, और यह जीवन परमेश्वर ने हमें इसलिये दिया है कि इस के द्वारा हम उसकी बड़ाई करें; ऐसा जीवन व्यतीत करें, और ऐसा चाल-चलन रखें, जिस से हमारे सृजनहार की महिमा हो। और यह काम हमें तब करना है जब कि हमारे शरीरों में जान हैं; जबकि हमारे हाथ-पैरों में शक्ति है। हमें अपने जीवनों को परमेश्वर को देने के लिये उस समय तक नहीं ठहरना चाहिए, जबकि बुढ़ापे के कारण हमारे शरीर के अंग दुर्बल और अयोग्य हो जाएंगे। परमेश्वर केवल हमारा बचा हुआ दुर्बल जीवन ही नहीं चाहता बल्कि वह हमारा सारा जीवन चाहता है। वह चाहता है कि हम अपनी जवानी के दिनों में उसे याद रखकर चलें।

क्या आप आज अपने जीवन को परमेश्वर को समर्पित करना न चाहेंगे? आप इसी समय अपने जीवन को परमेश्वर को दे सकते हैं। वह आप के प्रत्येक पाप को क्षमा करके आपको एक ऐसा नया जीवन देना चाहता है जिसके द्वारा पृथ्वी पर उसकी महिमा होगी।

परमेश्वर ने कहा है, कि यदि हम उसके पुत्र यीशु मसीह में, जो हम सब के पापों का प्रायश्चित है, विश्वास लाकर अपने पापों से मन फेर लें और उनकी क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर अपने जीवनों को उसे सौंप दें तो वह अपने जीवन के द्वारा हमारी ऐसी अगुवाई करेगा कि जिस प्रकार उसके जीवन से परमेश्वर की महिमा हुई थी, वैसे ही हमारे जीवन भी उसकी बड़ाई के योग्य बन जाएंगे।

यदि आप ने अभी तक भी अपना जीवन उसे नहीं दिया है, तो मेरा आपसे यह आग्रह है, कि इस से पहिले कि विपत्ति के वे दिन आएं आप अपने आप को उसे दे दें।

परमेश्वर कहां हैं?

आज हम इस प्रश्न पर विचार करेंगे कि, परमेश्वर कहां हैं? बहुतेरे लोग आज परमेश्वर के होने के प्रमाण चाहते हैं। वे जानना चाहतें हैं कि परमेश्वर कहां है। वे उसे देखना चाहतें हैं और केवल तभी उस पर विश्वास लाना चाहतें हैं। दाऊद नाम के बाइबल के एक लेखक ने कई हज़ार वर्ष पूर्व परमेश्वर के सम्बन्ध में लिखकर यूं कहा था :

"हे परमेश्वर, तू ने मुझे जांचकर जान लिया है; तू मेरा उठना-बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है। मेरे चलने और लेटने की तू भलि-भांति छानबीन करता है, और मेरे पूरे चाल-चलन का भेद जानता है। हे परमेश्वर मेरे मुंह में ऐसी कोई बात नहीं है जिसे तू पूरी तरह से न जानता हो। तूने मुझे आगे-पीछे घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है। यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है, यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है। मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? मैं तेरे सामने से किधर भागूं? यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है! यदि मैं अपना बिछोना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है! यदि मैं भोर की किरनों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूं, तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और अपने दहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा। यदि मैं कहूं कि अंधकार में तो मैं छिप जाऊंगा, और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अन्धेरा हो जाएगा। तौभी अन्धकार मुझे तुझ से न छिपाएगा, क्योंकि रात तो दिन की तरह प्रकाश देगी; क्योंकि तेरे लिये अन्धेरा और उजाला दोनों एक समान हैं। मेरे मन का स्वामी तो तू ही है; तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा था। मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयपूर्ण और अद्‌भुत रीति से रचा गया हूं।" (भजन संहिता 139:1-14)।

बाइबल का लेखक यहां विशेष रूप से हमारा ध्यान इस बात पर दिला रहा है, कि परमेश्वर सर्वज्ञानी, और सर्वविद्यमान, और सर्वशक्तिमान है। यहां हम इस बात को अवश्य ध्यान में रखें, कि बाइबल जिस परमेश्वर के बारे में हमें बताती है, वह कोई मिट्टी या पत्थर, या लोहे या टीन का बना हुआ परमेश्वर नहीं है। वह परमेश्वर, जिसके बारे में बाइबल हमें बताती है, लोगों के हाथों से बनाए हुए घरों के भीतर नहीं रहता। पर वह परमेश्वर एक सच्चा और ज़िन्दा परमेश्वर है। इस से भी पहिले कि सारी सृष्टि बनकर अपने अस्तित्व में आती। वह विद्यमान था। क्योंकि उसी ने सारी चीज़ों की सृष्टि की है।

बाइबल कहती है कि, "आदि में (यानि आरम्भ में) परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की थी।" और यह बात मानने योग्य है। क्योंकि यदि आकाश और पृथ्वी की सृष्टि परमेश्वर ने नहीं की थी तो फिर ये सब वस्तुएं कहां से आ गईं? क्या ज़ीरो में से कुछ निकल सकता है? क्या शून्य में से कोई चीज़ पैदा हो सकती है? यदि कुछ भी नहीं होता तो इतनी बड़ी और अद्भुत दुनिया कहां से आती? इस बात के जवाब में एक बार एक आदमी ने कहा था, कि लाखों साल पहिले एक बहुत बड़ा "विस्फोट" या "धमाका" हुआ था और उसी के फलस्वरूप आकाश और पृथ्वी पर सब चीज़ों का निर्माण हो गया था। क्या आप इस बात को मानने को तैयार हैं? क्या विस्फोट या धमाके किसी तरह की व्यवस्था, सुंदरता और बनावट को जन्म दे सकते हैं? इसके विपरीत, विस्फोटों के द्वारा अवयवस्था उत्पन्न होती है, नुकसान होता है।

मान लीजिये, आप घड़ियों की एक दुकान में जाते हैं, और घड़ीवाला आप से कहता है कि "एक बार एक बहुत बड़ी घड़ी थी और अचानक एक बार उसमें एक बहुत बड़ा धमाका हुआ था,

और मेरी दुकान में रखी ये हज़ारों छोटी-छोटी सुंदर घड़ियां उसी विस्फोट के परिणाम से उत्पन्न हुई थीं।" क्या आप उसकी बात पर विश्वास कर लेंगे? तौभी, हकीकत यह है, कि संसार की सारी घड़ियों की तुलना भी सृष्टि की अद्‌भुत चीज़ों के साथ नहीं की जा सकती।

बाइबल का लेखक एक अन्य जगह इस प्रकार कहता है, "आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाश-मन्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है।" (भजन-संहिता 19:1)। जब इन्सान सबसे पहिली बार चांद पर उतरा था, और जब वे अंतरिक्ष यात्री पृथ्वी पर वापस आए थे, तो उन में से एक ने अपनी अंतरिक्ष यात्रा से प्रेरणा पाकर बाइबल में लिखे इन शब्दों को दोहराकर कहा था, कि, "जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चन्द्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले।" (भजन-संहिता 8:3, 4)।

बाइबल हमें बताती है, कि आरम्भ में परमेश्वर ने आकाश में सितारों को और चन्द्रमा को बनाकर इसलिये रखा था कि उनसे रात में प्रकाश हो, और सूरज को इसलिये बनाया था कि उस से दिन में उजियाला हो। जब अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा पर से होकर पृथ्वी पर वापस आए थे तो उन्होंने बाइबल की इस बात की पुष्टि की थी कि चांद पर जाकर बसा नहीं जा सकता। फिर इस सच्चाई पर भी ध्यान दें, कि हमारे वैज्ञानिकों ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि सूरज को पृथ्वी से नौ-सौ-तीस लाख मील दूर रखा गया है। अगर यह दूरी ज़रा सी भी और अधिक होती तो यह सारा संसार न जाने कब का ठंड से जमकर नाश हो गया होता। और अगर सूरज ज़रा सा भी ज़मीन के और करीब होता, तो पृथ्वी पर की प्रत्येक

वस्तु न जाने कब की जलकर भस्म हो चुकी होती, क्योंकि सूरज एक ऐसा विशाल आग का गोला है जिसका तापमान दस हज़ार डिग्री फ़ाहरेनहाइट से भी ज़्यादा है। पृथ्वी और सूर्य के बीच इतना सही अंतर किसने रखा है?

हम सब जानते हैं कि पृथ्वी हर एक चौबीस घंटे में अपनी धुरी पर पूरा एक चक्कर लगा लेती है। परन्तु मान लें यदि ऐसा न हो, या मान लें कि पृथ्वी प्रतिदिन की जगह महीने में एक ही चक्कर लगाए। जानतें हैं तब क्या होगा? हम सब दिन में जलकर और रात में ठंड से जमकर नाश हो जाएंगे। और क्या आप जानते हैं, कि चंद्रमा से समुद्री लहरें प्रभावित होती हैं? चंद्रमा की दूरी पृथ्वी से दो-सौ-चालिस हज़ार मील की है। अब मान लें, यदि यह दूरी चौबिस-सौ मील की होती तब क्या होता? यदि ऐसा होता तो समुद्री लहरों के खिचाव से हमारी पृथ्वी हर एक दिन पानी से दो बार भर जाती। वास्तव में इस तरह की हज़ारों और ऐसी बातें हैं जो हमें यह मानने को विवश कर देती हैं कि इस अद्‌भुत संसार को जिसने बनाया है वह सचमुच में बड़ा ही महान्, सर्वशक्तिमान और बुद्धिमान है। और बाइबल कहती है, कि वह जगत का बनानेवाला परमेश्वर है। "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमन्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है।" (भजन-संहिता 19:1)।

कोई ऐसी जगह नहीं है जहां हम परमेश्वर को नहीं देख सकते। वह सब जगह विद्यमान है। उसकी सृष्टि ही उसके होने का प्रमाण है। आप अपने रेडियो की आवाज़ को सुनते हैं, पर आप उस बिजली को नहीं देख पाते जिसकी ताकत से वह आवाज़ आप तक पहुंचती है। लेकिन उस आवाज़ को सुनकर आप यह विश्वास करते हैं कि वह आप तक बिजली के द्वारा पहुंच रही है। ऐसे ही जब हम पृथ्वी और आकाश में सब तरह की चीज़ों को देखते हैं,

और उनके कामों को देखते हैं, तो हमें यह विश्वास हो जाता है कि उन सबका बनानेवाला ही परमेश्वर है।

बाइबल में लिखा है, कि एक दिन पृथ्वी के सारे लोग परमेश्वर के सामने अपना-अपना लेखा देने को खड़े होंगे। क्या आप उसमें विश्वास करते हैं? क्या आप उसके सामने आने को तैयार हैं? अगर आज आप उसमें विश्वास नहीं करेंगे, तो न्याय के दिन आप को उसमें विश्वास करना ही पड़ेगा, क्योंकि तब आपको उसके सामने खड़े होकर अपने सारे जीवन का लेखा देना पड़ेगा। लेकिन मैं आप से आग्रह करता हूं कि आप उसमें विश्वास लाएं और उसकी बात मानकर अपनी सब बुराइयों से अपना मन फिराएं और उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम से अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें क्योंकि उसे परमेश्वर ने आप के और सारे जगत पापों का प्रायश्चित ठहराया है।

वह इन्सान मूर्ख है, बाइबल कहती है, जो यह कहता है, कि कोई परमेश्वर नहीं है। (भजन-संहिता 14:1)। क्योंकि सारी सृष्टि परमेश्वर के होने का प्रमाण है। कोई जगह ऐसी नहीं है जहां हम परमेश्वर को नहीं देख सकते-हर एक चीज़ उसके होने की गवाही देती है। और जो लोग उसमें इस जीवन में विश्वास नहीं रखते, उन्हें अपने आनेवाले जीवन में उस में विश्वास करना ही पड़ेगा, क्योंकि तब उन्हें उसके न्याय का सामना करना ही पड़ेगा। पर धन्य हैं वे लोग जो इस जीवन में उस पर विश्वास रखते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, क्योंकि वे युगानुयुग उसके साथ रहेंगे।

सच्चा उद्धारकर्त्ता

अपने प्रतिदिन के जीवन में हमारे सामने बहुतेरे प्रश्न आते हैं, और कई प्रकार की समस्याएं भी आती हैं। और अपनी प्रत्येक समस्या का हम कोई न कोई विशेष हल ढूंढते हैं। हम जानते हैं कि कौन सी चीज़ कहां पर मिलेगी और उस चीज़ को लेने के लिये हम उसी जगह पर जाते हैं। हम मोची के पास जाकर कपड़े सिलवाने की बात नहीं करते; और न दर्ज़ी की दुकान में जूतियां गठवाने के लिये जाते हैं। यानी सांसारिक बातों में हम बड़ी ही होशियारी से काम लेते हैं। विभिन्न कामों के लिये सरकार ने अलग-अलग दफ़्तर खोल रखें हैं। अगर हमें राशन कार्ड का काम होता है तो उसके लिये हम बिजली के दफ़्तर में नहीं जाते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि बिजली के दफ़्तर में केवल बिजली के बिल ही जमा किए जाते हैं। आजकल हमारे देश में सैंकड़ों लोग बाहर के देशों में काम करने के लिये जा रहे हैं। पर बाहर जाने से पहिले उन्हें वीज़ा लेना पड़ता है, और वीज़ा लेने के लिये वे विशेष रूप से उसी देश के दूतावास में जाते हैं जिस देश में वे जाना चाहते हैं। फिर, इसी प्रकार उन्हें टिकट खरीदना पड़ता है, और यहां भी उन्हें इस बात की सावधानी बरतनी पड़ती है कि वे विशेष रूप से उसी एअरलाईन्स का टिकट खरीदें जिसका हवाई जहाज़ उस देश में जाता है जहां वे जाना चाहते हैं।

पर इस पृथ्वी पर जहां असली वस्तुएं वर्तमान हैं वहां नकली चीज़ें भी हैं। कभी-कभी लोग टिकट तो खरीद लेते हैं, पर बाद में पता चलता है कि वह टिकट नकली था, क्योंकि वह किसी नकली एजेन्सी से खरीदा गया था। कभी-कभी लोग पासपोर्ट और वीज़ा लेकर किसी देश में पहुंच जाते हैं, और वहां पहुंचकर उन्हें यह जानकर बड़ा धक्का लगता है कि उनका पासपोर्ट या वीज़ा, और

कभी-कभी दोनों ही चीजें नकली हैं। उन्हें इस बात पर विश्वास नहीं होता, क्योंकि उन्होंने उसे प्राप्त करने के लिये बड़ी मेहनत की थी और बहुत पैसा भी लगाया था। और आप कल्पना करके देख सकते हैं, कि ऐसे समय में उन लोगों का क्या हाल होता होगा। बात यह है, कि ये लोग जल्दबाजी में आकर कुछ लोगों की बातों में आ जाते हैं, और ऐसी एजेन्सियों और ऐसे संगठनों के हाथों में पड़ जाते हैं जिन्हें उस काम के लिये नियुक्त नहीं किया गया है, और इस प्रकार वे धोखे में फंस जाते हैं। बहुतेरे लोग छानबीन किए बिना यों ही किसी बात को मान लेते हैं।

लेकिन यह सच्चाई सिर्फ़ दुनियावी बातों तक ही सीमित नहीं है, पर आत्मिक दृष्टिकोण से भी इस बात को हम हर जगह देखते हैं। क्योंकि लोग मुक्ति के लिये सच्चे परमेश्वर के पास न जाकर ऐसी-ऐसी वस्तुओं और ऐसे-ऐसे लोगों के पास जाते हैं जिन्हें उसने नहीं ठहराया है। इस पृथ्वी पर सैंकड़ों गुरू हैं, और हज़ारों स्वामी हैं, और लाखों भगवान हैं। पर तौभी सच्चाई यह है, कि हम सबका और सारे जगत का केवल एक ही सच्चा परमेश्वर है। वह परमेश्वर हम सबसे प्रेम करता है, और उसने हमारे प्रति अपने प्रेम को प्रकट किया है। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा है कि जगत के उद्धार के लिये उसने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया। (यूहन्ना 3:16)। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने अपने प्रेम की भलाई को हम सब पर इस प्रकार प्रकट किया है कि जब हम सब पापी ही थे तभी उस का पुत्र मसीह हमारे लिये मर गया। (रोमियों 5:8)। क्रूस पर मसीह की मौत हमारे लिये परमेश्वर के प्रेम का सबूत है। और केवल उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा ही हम उद्धार पा सकते हैं। क्योंकि उसे परमेश्वर ने हमारे पापों का प्रायश्चित ठहराया है।

यीशु ने अपने पाप रहित जीवन से, और अपने सामर्थपूर्ण

कामों के द्वारा यह प्रमाणित किया था कि वह वास्तव में परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करने कों आया था। उसके ये शब्द आज भी हम बाइबल में पढ़ते हैं कि, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14:6)। उसे परमेश्वर ने ठहराया है। उसने कहा था, कि स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है। (मत्ती 28:18)। वह परमेश्वर की महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है। (इब्रानियों 1:3)। वह आदि से परमेश्वरत्व में परमेश्वर के साथ था। परन्तु मनुष्य का उद्धार करने को वह पृथ्वी पर आकर एक मनुष्य बन गया था। (यूहन्ना 1:1-14)। एक बार जब उसके एक चेले ने उस से कहा था कि प्रभु, पिता परमेश्वर को हमें दिखा दे। तो यीशु ने उस से कहा था कि "मैं इतने दिनों से तुम्हारे साथ हूं और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है : तू क्यों कहता है; कि पिता को हमें दिखा। क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है। मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूं; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।" (यूहन्ना 14:8-11)।

इस पृथ्वी पर यीशु ने बड़े-बड़े अदभुत और आश्चर्यपूर्ण काम किए थे। आंधी और तूफ़ान उसका शब्द सुनकर शांत हो जाते थे। वह दूर से लोगों को कहता था कि चंगे हो जाओ और वे उसी क्षण चंगे हो जाते थे। वह उन्हें छूता और उसी पल उनकी सारी बीमारियां दूर हो जाती थीं। उसका शब्द सुनकर मुर्दे जी उठते थे। लोग हज़ारों की संख्या में उसके पीछे-पीछे चलते थे, ताकि वह उनके दुखों को दूर कर दे। और वह अपने हाथ में थोड़ा सा भोजन लेकर उसके लिये धन्यवाद देता था कि उसे सब लोगों

में बांट दो, और वह थोड़ा सा भोजन उसकी सामर्थ से इतना अधिक हो जाता था कि हज़ारों लोगों के खाने के बाद भी बचे हुए टुकड़ों के कई टोकरे वहां से उठाए जाते थे। यीशु के इन सामर्थपूर्ण कामों के बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं, और बाइबल कहती है कि "यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये (जो लिखे गए हैं) इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना 20 : 30, 31)।

क्रूस पर मरने से पहिले यीशु ने अनेकों सामर्थपूर्ण काम करके लोगों पर यह प्रकट किया था कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। और जिन लोगों ने यीशु को और उसके सामर्थपूर्ण कामों को अपनी आंखों से देखा था उन्होंने उसके अदभुत कामों के बारे में बाइबल में लिखा था, ताकि हम भी उन के बारे में पढ़कर आज यह विश्वास लाएं कि यीशु सचमुच में परमेश्वर का पुत्र था। और अगर हम यह विश्वास करते हैं, कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था, तो हम यह भी मान लेंगे कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर मरा था। और, आज यदि आप अपने सारे मन से उस में विश्वास लाएंगे और प्रत्येक गलत बात से अपना मन फिराकर उसकी आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लेंगे, तो वह आपके सब पापों से आपका उद्धार करेगा और आपको स्वर्ग में जाने की आशा देगा। केवल यीशु ही सच्चा उद्धारकर्त्ता है। परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में केवल वही एकमात्र बिचवई है। उसे परमेश्वर ने उद्धारकर्त्ता ठहराया है। उसने अपने जीवन से, और कामों से, और पुनरुत्थान से इस बात को प्रमाणित किया है। केवल उसी ने पापियों का उद्धार करने को अपना लोहू बहाया था। वही यीशु, आज आप को यह कहकर अपने पास बुला रहा है, "हे

सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती 11 : 28)। क्या आप विश्वास करके उसके पास आएंगे?

उनका सामना हम सब को करना पड़ेगा

मुझे इस बात से खुशी है कि इस अवसर पर मैं आपका ध्यान कुछ बड़ी ही ख़ास बातों पर दिला सकता हूं। मेरे विचार में, यह बड़ा ही ज़रूरी है कि हम समय-समय पर रुककर स्वयं अपने आप को जांचकर देखें कि हम जीवन में कहां हैं। अकसर हमें अन्य लोगों में गलतियां नज़र आती हैं। दूसरे लोगों में दोष निकालकर उनकी निन्दा करना इन्सान की एक विशेषता है। उसे खुद अपने बड़े-बड़े दोष नज़र नहीं आते क्योंकि वह उनकी तरफ़ देखता नहीं है, पर अन्य लोगों की छोटी-छोटी बुराईयां भी उसे बहुत बड़ी-बड़ी नज़र आती हैं। प्रभु यीशु ने सिखाया था कि, "दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? और जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं?" इसलिये, "हे कपटी पहिले अपनी ही आंख से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भलि-भांति देखकर निकाल सकेगा।" (मत्ती 7 : 1-5)। सो हमें चाहिए कि हम स्वयं अपना निरीक्षण करें; अपने आप को जांचकर देखें कि आज हम कहां हैं? और हमारे इस कार्यक्रम का एक विशेष उद्देश्य यही है। हम बाइबल में लिखी बातों के द्वारा अपना-निरीक्षण करना चाहते हैं। हम देखना चाहते हैं, कि आज हम परमेश्वर की दृष्टि में कहां हैं; उसके लेखे में आज हमारा व्यक्तित्व क्या है। और मान लें यदि आज हमें इस संसार को छोड़कर जाना पड़ जाए तो हमारा क्या होगा? हम कहां जाएंगे? हम कहां रहेंगे?

हमारे संसार में अनेकों प्रकार के लोग हैं। कोई अमीर है तो

कोई गरीब है, कोई स्वस्थ है तो कोई रोगी है। यहां बहुत पढ़े-लिखे भी हैं और बिल्कुल अनपढ़ भी हैं। हमारे रंग अलग हो सकते हैं, बोल-चाल अलग हो सकती हैं; हमारे व्यक्तित्व भिन्न हो सकते है; हमारी सांस्कृतियां अलग-अलग हो सकती हैं। पर फिर भी कुछ चीजें ऐसी हैं जिन का सामना प्रत्येक मनुष्य को एक ही समान करना पड़ता है। जैसे कि, हम देखते हैं कि हम सब का जन्म हुआ था। हम सब इस संसार में एक ही तरह से आए हैं, यानि हम सबका जन्म हुआ था। और हम जितनों ने इस जगत में जन्म लिया है, हमारे लिये यह भी ज़रूरी है कि हम सब इस पृथ्वी पर अपना जीवन बिताएं। जीवन निर्वाह करने की हमारी परिस्थितियां अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन हम सब को जीवन को विभिन्न स्थितियों से होकर गुज़रना ही पड़ता है। ऐसे ही यह भी आवश्यक है, कि इस संसार में जितने लोग जन्म लेकर आते हैं उन सब को एक न एक दिन मरना पड़ता है। वे सब शायद अलग-अलग परिस्थितियों में मरें, लेकिन मरेंगे ज़रूर। बाइबल में लिखा है, कि इन्सान के लिये यह बात परमेश्वर की ओर से निश्चित की गई है कि हर एक को एक बार मरना पड़ेगा और फिर हर एक इन्सान को एक दिन परमेश्वर के न्याय का सामना करना पड़ेगा। (इब्रानियों 9:27)। यानि ये कुछ ऐसी बातें हैं जिनका सामना करने से हम इन्कार नहीं कर सकते। चाहे हम पसन्द करें या न करें लेकिन एक दिन हमें मरना पड़ेगा। और ऐसे ही, चाहे हम पसंद करें या न करें लेकिन एक दिन हमें परमेश्वर के न्याय का सामना करना ही पड़ेगा। और इसलिये आज हम सब के सामने एक बहुत ही बड़ा सवाल यह है कि क्या हम परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़े होने को तैयार हैं?

कभी-कभी कुछ लोग ज़िन्दगी में किसी बात से निराश होकर अकसर कह देते हैं कि इस से तो अच्छा होता यदि हमारा

जन्म ही न हुआ होता। पर हकीकत यह है कि उनका जन्म हुआ था, और वे ज़िन्दा हैं। कोई इन्सान मरने की इच्छा नहीं रखता, पर वह मरता है, क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा ठहराया है। ठीक यही बात न्याय के सम्बन्ध में भी है। हम चाहें, या न चाहें लेकिन एक दिन हम सब उसके न्याय का सामना करेंगे। प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब वह जगत का न्याय करने को वापस आएगा तो उस समय पृथ्वी के सब लोग उसके सामने खड़े होंगे और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है वैसे ही वह उन सबको एक दूसरे से अलग करेगा। (मत्ती 25:32)। बाइबल कहती है, "क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्यायासन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।" (2 कुरिन्थियों 5:10)।

बाइबल की सारी शिक्षाओं का निचोड़ यही है, कि एक दिन हर एक मनुष्य का न्याय होगा। परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को जगत में इसीलिये भेजा था कि वह मनुष्य को चिताए कि एक दिन परमेश्वर हरएक इन्सान का न्याय करेगा। प्रभु यीशु मसीह ने इस बारे में बहुत सी शिक्षाएं दी थीं। अनेकों कहानियों या दृष्टान्तों के द्वारा यीशु ने लोगों पर परमेश्वर की इस बड़ी सच्चाई को प्रकट किया था। उसने लोगों को नूह का उदाहरण देकर कहा था, कि जिस प्रकार उसके समय में अचानक जल-प्रलय आकर सब अधर्मियों को बहा ले गया था, वैसे ही एक दिन एकाएक उसके न्याय का दिन लोगों पर आ जाएगा। इसी गम्भीर चेतावनी के साथ यीशु ने अपने चेलों को यह कहकर सारे जगत में भेजा था, कि तुम सारे जगत में जाकर सब लोगों को सुसमाचार प्रचार को और जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मरकुस 16:16)।

प्रेरित पौलुस के समय में जो लोग अपने मन की अनर्थ रीतियों पर चलकर नाना प्रकार की वस्तुओं को पूज रहे थे, उन्हें पौलुस ने सच्चे परमेश्वर के बारे में बताकर उनसे कहा था कि, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक-दिन ठहराया है जिस में वह उस मनुष्य (अर्थात मसीह)के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों 17:30, 31)।

परमेश्वर की बाइबल में लिखा है, कि जिस दिन वह प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जगत का न्याय करने को आएगा उस दिन उसके शब्द से सब मरे हुए लोग जी उठेंगे, बाइबल कहती है, "जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।" (यूहन्ना 5:29)। यह बात कुछ लोगों को अवश्य ही बड़ी विचित्र सी लगती है, बहुतेरे इस बात पर विश्वास नहीं करना चाहते। पर जो परमेश्वर मनुष्य को जीवन दे सकता है, और जो परमेश्वर ज़मीन के भीतर से तरह-तरह के पेड़-पौधों को पैदा कर सकता है क्या उसके लिये कुछ भी असम्भव है? नूह के समय में लाखों लोग सिर्फ़ इसलिये नाश हुए थे क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचन पर विश्वास नहीं किया था। उन्होंने उसकी बातों की हंसी उड़ाई थी। उन्होंने परमेश्वर की बात मानकर अपना मन नहीं फिराया था। और मेरे अज़ीज़ो न्याय के दिन न जाने कितने लोग परमेश्वर के सामने से दूर होकर नरक की उस भयानक आग में हमेशा के लिये प्रवेश करेंगे जो कभी बुझेगी नहीं। और ऐसा इसलिये होगा क्योंकि इस ज़मीन पर बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर की बातों पर विश्वास लाकर अपना मन नहीं फिराना चाहते। परन्तु मेरी

आशा है कि आप परमेश्वर की बातों पर अवश्य ध्यान देंगे और उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाकर बुराई से अपना मन फिराएंगे और अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर उसके जीवन का अनुसरण करेंगे।

परमेश्वर आप से प्रेम करता है। वह आप को बचाना चाहता है। वह आप को स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है। इस से पहिले कि न्याय का वह महान दिन आए, इस अवसर का लाभ उठाएं। अपने आप को उससे मिलने के लिये तैयार करें। क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह यीशु के न्यायासन के सामने खुल जाए ताकि हर एक जन अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला पाए।(2 कुरिन्थियों 5:10)।

अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए

बाइबल न केवल हमें सुलैमान जैसे बुद्धिमान लोगों के बारे में ही बताती है, पर परमेश्वर की पुस्तक में हमें कुछ ऐसे लोगों के बारे में भी मिलता है जो वास्तव में बड़े ही मूर्ख थे। और कुछ ऐसे लोगों के बारे में बाइबल हमें बताती है जो मूर्ख होते हुए भी अपने आप को बड़े ही अकलमन्द समझते थे। प्रभु यीशु मसीह ने एक बार अपने एक दृष्टान्त में एक ऐसे मूर्ख आदमी का उल्लेख किया था जिसने अपने रहने के लिये एक बड़ा ही शानदार घर बनवाया था। पर कुछ समय बाद जब तूफ़ान आया था, तो वह घर गिरकर सत्यानाश हो गया था। क्योंकि उस घर की नीव पक्की नहीं थी; उसकी नीव बालू रेत पर पड़ी थी। इस कहानी से प्रभु ने लोगों को यह शिक्षा दी थी, कि पृथ्वी पर हर एक इन्सान अपने चाल-चलन से और अपने कामों से भविष्य के लिये अपना एक आत्मिक घर बना रहा है। और जब परमेश्वर का न्याय का दिन आएगा तो उन सब लोगों के घर गिरकर हमेशा के लिये सत्यानाश हो जाएंगे जिन्होंने अपने घरों की नीव बुरे कामों पर और बुरे चाल-चलन पर डाली होगी। यह पाठ आज उन सब लोगों के लिये बड़ा ही ज़रूरी है, जो खाना-पीना और मौज उड़ाना ही अपने जीवन का उद्देश्य मानते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए, कि एक दिन परमेश्वर हम सबका हमारे कामों के अनुसार न्याय करेगा। प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर लोगों को यही शिक्षा देने आया था। उसने कहा था, "जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा, जिसने अपना घर बालू पर बनाया था, और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (मत्ती 7:26, 27)।

इसी प्रकार एक और तरह के मूर्ख का वर्णन करके बाइबल कहती है, कि वह इन्सान जो यह कहता है, कि कोई परमेश्वर है ही नहीं, एक मूर्ख है। (भजन संहिता 14 :2)। कुछ लोग परमेश्वर में विश्वास करनेवाले लोगों का मज़ाक उड़ाकर अपने आप को बुद्धिमान साबित करना चाहते हैं। परन्तु वास्तव में ऐसा करके वे अपनी मूर्खता का प्रमाण देते हैं। क्योंकि आकाश और पृथ्वी और उन में की सारी वस्तुएं इस बात का प्रमाण हैं कि उनका कोई बनानेवाला है। जब हम किसी मशीन को देखते हैं तो हम जानते हैं कि उसका कोई बनानेवाला है। आज अनेकों आश्चर्यपूर्ण मशीनों के साथ-साथ हमने कमप्यूटर के युग में प्रवेश कर लिया है। जिस काम को करने में पहिले कई दिन लग जाते थे वही काम अब कुछ ही मिनटों में हो जाता है। बस बटन दबाने की देरी है, और मशीन पर लगे परदे पर सारा का सारा ब्योरा आ जाता है। हिसाब लगाने के लिये अब घन्टों तक बैठकर जोड़ने-घटाने में दिमाग लड़ाने की आवश्यकता नहीं है। लोग अब कैलक्यूलेटर का इस्तेमाल करते हैं और कुछ ही सैकेण्ड में उन्हें पूरा और सही जवाब मिल जाता है। अब मान लीजिए, यदि कोई आदमी आता है और यह कहता है कि ये सब मशीने, कैलक्यूलेटर और कमप्यूटर, इत्यादि अपने आप ही पैदा हो गए हैं, इनका कोई बनानेवाला नहीं है। तो आप ऐसे इन्सान के बारे में क्या कहेंगे? क्या आप किसी ऐसे इन्सान को बहस करके समझा सकते हैं? कदापि नहीं। जो मनुष्य ऐसा सोचता है और यह कहता है कि किसी वस्तु का कोई बनानेवाला नहीं है, वह एक निपट मूर्ख है।

पवित्र बाइबल कहती है, कि, "परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रकट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाये रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रकट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रकट

किया है। क्योंकि उस के अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, और यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। और वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य और पक्षियों, और चौपायों और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।" (रोमियों 1:18-23)।

आज ही की तरह उस समय में भी बहुतेरे ऐसे लोग थे जो नाशमान पशु-पक्षियों और मनुष्यों के साथ अविनाशी परमेश्वर की तुलना करते थे। वे तरह-तरह के जीव-जन्तुओं की मूरतें बनाकर कहते थे, कि ये हमारे परमेश्वर हैं और उन्हें पूजते थे। सो परमेश्वर की बाइबल कहती है, कि वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर स्वयं मूर्ख बन गए थे। क्योंकि जिस परमेश्वर ने जीव-जन्तुओं को बनाया है, उनसे उसकी तुलना कैसे की जा सकती है? जिस परमेश्वर ने मिट्टी और पत्थरों को बनाया है, उन्हीं से उसकी तुलना कैसे की जा सकती है? जिस परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है, उसी से उसकी तुलना कैसे की जा सकती है? और जिस परमेश्वर ने सारी वस्तुओं की सृष्टि की है, उसी सृष्टि से उसकी तुलना कैसे की जा सकती है? सो वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए।

फिर जो लोग अपनी ताकत और धन और सम्पत्ति के ऊपर भरोसा रखते हैं उनके बारे में बाइबल कहती है, कि जो लोग अपने ऊपर भरोसा रखते हैं वे मूर्ख हैं। (नीतिवचन 28:26)। "तू अपनी समझ का सहारा न लेना" परमेश्वर की पुस्तक कहती है,

"बरन सम्पूर्ण मन से परमेश्वर पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा। परमेश्वर का भय मानना और बुराई से अलग रहना।" (नीतिवचन 3:5-7)।

इस बारे में एक बार एक बड़ी ही अच्छी कहानी के द्वारा शिक्षा देकर यीशु ने कहा था, कि एक बार किसी धनवान ज़मींदार की भूमि में बहुत बड़ी उपज पैदा हुई। सो वह धनवान अपने मन में यह विचार करने लगा कि अब इतनी सारी फ़सल को मैं रखूंगा कहां, क्योंकि मेरे गोदामों में तो इतनी जगह भी नहीं है। फिर उस ने अपने मन में योजना बनाकर कहा कि मैं ऐसा करूंगा, कि मैं अपने पुराने गोदामों को तुड़वाकर उनकी जगह बड़े-बड़े गोदाम बनवाऊंगा। और फिर उन में अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगा; अपने प्राण से कहूंगा, कि अब तो तेरे पास आनेवाले कई सालों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है, सो, अब किसी भी बात की चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है, अब तो खा, पी, और सुख से रह। परन्तु यीशु ने कहा, कि वह धनवान अपने मन में जब यह योजना बना ही रहा था, तभी परमेश्वर ने उस से कहा, कि हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा: तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह सब किस का होगा? और फिर प्रभु ने अपने सुननेवालों से कहा, कि "ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं है।" (लूका 12:16-21)।

इस कहानी से हम यह सीखते हैं कि जो लोग अपनी ताकत या धन-सम्पत्ति या ज़मीन पर किसी भी चीज़ के ऊपर अपना भरोसा रखते हैं, वे बड़े ही मूर्ख हैं, "क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।" (लूका 12:15)। बुद्धिमान राजा सुलैमान ने अपनी पुस्तक में एक जगह लिखकर यूं

कहा था कि, "मैंने धरती पर एक बड़ी बुरी बला देखी है; अर्थात वह धन जिसे उस के मालिक ने अपनी ही हानि के लिये रखा हो।" (समोपदेशक 5 : 13)। धन-सम्पत्ति की बहुतायत अकसर मनुष्य को परमेश्वर से दूर कर देती है, और इन्सान उस पर इतना अधिक भरोसा करने लगता है कि उस के आगे इन्सान को और कुछ दिखाई नहीं देता। इसीलिये एक बार प्रभु यीशु ने कहा था, "कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।" (मत्ती 19 : 24)।

पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन वास्तव में बड़ा ही छोटा है, और इस छोटे से अनिश्चित जीवन को हमें यूं ही मूर्खता की बातों में नहीं गवां देना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि यह संसार हमारा सदा का घर नहीं है। पर एक दिन हम यहां से जाएंगे, उस अनन्तकाल में, उस अनन्त स्थान में रहने के लिये जहां धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे और अधर्मी अनन्त दंड पाएंगे। सबसे बड़ी और मुख्य बात इसलिए यह है, कि क्या आप स्वर्ग में हमेशा का जीवन पाने के लिये यहां से जाने को तैयार हैं?

यीशु कब, कहां, कैसे और क्यों आएगा?

आज के पाठ में मैं आप का ध्यान इस बात पर दिलाना चाहूंगा कि प्रभु यीशु मसीह के दोबारा आने के बारे में बाइबल हमें क्या बताती है। अपनी मौत और जी उठने और स्वर्ग पर वापस जाने से पहिले यीशु ने कई बार अपने चेलों से कहा था, कि मैं फिर वापस आऊंगा। उसके चेले नहीं चाहते थे कि वह उन्हें छोड़कर जाए क्योंकि उसके साथ वे अपने आपको हर तरह से सुरक्षित महसूस करते थे। वे सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिये थे, लेकिन अब वह स्वयं उन्हें छोड़कर जा रहा था। लेकिन उसका जाना ज़रूरी था। क्योंकि वह इस ज़मीन पर रहने के लिये नहीं आया था। वह इन्सान को स्वर्ग का मार्ग दिखाने को आया था। उसने शिक्षाएं दी थीं ताकि उन्हें मानकर लोग स्वर्ग के योग्य बन जाएं। उसने एक पवित्र और धर्मी जीवन बिताया था, ताकि लोग उसके जीवन का अनुसरण करके उसके समान बन जाएं। फिर उसने अपने पाप-रहित जीवन को इसलिये बलिदान कर दिया था ताकि सारे जगत के लोगों के पापों का प्रायश्चित हो जाए। और अब, सब कुछ करने के बाद, वह वापस जा रहा था। लेकिन उसने अपने चेलों से कहा था कि, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, और यदि न होते तो मैं तुम से कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।" (यूहन्ना 14:1-3)।

एक अन्य स्थान पर जब उसके चेलों ने उस से पूछा था कि वह कब वापस आएगा और उसके आने का क्या चिन्ह होगा? तो

यीशु ने जवाब में उन से कहा था, कि, "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता; न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।" पर, जैसे नूह के दिन थे, यीशु ने कहा था, वैसे ही मेरा आना भी होगा। "क्योंकि जैसे जलप्रलय से पहिले के दिनों में जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते पीते थे, और उन में ब्याह शादी होती थी। और जब तक जल प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उन को कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही," यीशु ने कहा था, "मेरा आना भी होगा" "उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा, दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियां चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।" (मत्ती 24:36-42)।

सो हम यह जानते हैं कि बाइबल में लिखा है, कि यीशु एक दिन अवश्य ही वापस आएगा। पर कोई भी ऐसा इन्सान ज़मीन पर नहीं है जो यह जानता है, कि वह कब वापस आएगा। क्योंकि प्रभु ने कहा था, कि जिस घड़ी के बारे में तुम सोच भी नहीं सकते मैं उस समय आ जाऊंगा। आज संसार में बहुतेरे लोग अटकलें लगा रहे हैं और प्रभु के आने के समय को निश्चित कर रहे हैं। और यह भी कह रहे हैं कि वह यरुशलेम में वापस आएगा पर ऐसे लोग बाइबल की शिक्षाओं को गलत ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं। ठीक ऐसा ही विलियम मिलर ने अमरीका में कई साल पहिले किया था। उसने घोषणा की थी, कि अकटूबर 1943 में यीशु कैलीफ़ोरनिया में एक पहाड़ पर आएगा। सो बहुतेरे लोगों ने मिलर के कहने में आकर अपना सब कुछ बेच डाला था, और अपने बच्चों को स्कूल जाने से रोक दिया था। और सफ़ेद कपड़े पहिनकर वे उस पहाड़ पर चढ़कर प्रभु के आने की प्रतीक्षा करने लगे थे। पर अकटूबर 1943 आया और आकर चला भी गया—पर यीशु नहीं आया।

हमें याद रखना चाहिए कि यीशु ने कहा था, कि उसके आने के समय के बारे में कोई इन्सान नहीं जानता और कोई स्वर्गदूत नहीं जानता।

फिर, बाइबल यह भी कहती है, कि जब प्रभु यीशु आएगा तो हर एक आंख उसको देखेगी। (प्रकाशितवाक्य 1:7)। अब अगर वह यरुशलेम में ही आएगा, तो हर एक आंख उसे कैसे देखेगी? परन्तु बाइबल में लिखा है, कि जिस प्रकार यीशु बादलों पर ऊपर उठाया गया था, वैसे ही वह ऊपर बादलों पर वापस आएगा। (प्रेरितों 1:11, 12; प्रकाशितवाक्य 1:7; 1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। यानि वह नीचे पृथ्वी पर किसी भी जगह पर नहीं आएगा। क्योंकि पृथ्वी पर वापस आने का उसका अब कोई उद्देश्य नहीं है। पृथ्वी पर आकर वह क्या करेगा? कुछ लोग कहते हैं कि वह पृथ्वी पर आकर राज्य करेगा। पर सवाल यह है कि उस से क्या होगा? वह कोई इन्सान नहीं है। वह तो स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी है। उसने स्वयं पीलातुस से कहा था, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं हैं। (यूहन्ना 18:36)। हां, उसका राज्य है। वह आत्मिक दृष्टिकोण से आज भी करोड़ों लोगों के मनों पर राज्य करता हैं। पर उसका राज्य इस जगत का शारीरिक राज्य नहीं है, उसका राज्य एक आत्मिक राज्य है। परन्तु बाइबल हमें बताती है, कि जब प्रभु यीशु आएगा तो वह राज्य करने को नहीं पर न्याय करने के लिये आएगा। बाइबल का एक लेखक इस प्रकार कहता है: "हे प्रियो, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है। प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं, पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है; और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; बरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ

जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे। तो जब कि ये सब वस्तुएं इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए। और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए; जिस के कारण आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे। पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता बास करेगी।" (2 पतरस 3:8-13)।

सो जब प्रभु यीशु अपनी प्रतिज्ञानुसार जगत का न्याय करने के लिये एकाएक बादलों पर आएगा तो वर्तमान आकाश और पृथ्वी का अन्त हो जाएगा। उसके आने पर प्रत्येक शारीरिक वस्तु का अन्त हो जाएगा। आकाश और पृथ्वी और उन में की सब चीज़ें जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्य के लिये बनाया था, उसके आने पर वर्तमान न रहेंगी, ये सब चीज़ें मिट जाएंगी, समाप्त हो जाएंगी। किन्तु प्रभु अपने लोगों के लिये एक नए आकाश और नई पृथ्वी की स्थापना करेगा, जिनमें पवित्रता और धार्मिकता बास करेगी। वह नई पृथ्वी और नया आकाश आत्मिक होंगे, उनमें आत्मिक वस्तुएं होंगी और वह आत्मिक लोगों के लिये होंगे। पर बाइबल कहती है, कि, "उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला या झूठ का गढ़नेवाला किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।" (प्रकाशितवाक्य 21:27)।

क्या आप ने परमेश्वर के उस मेम्ने पर विश्वास कर लिया है जो सारे जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान हुआ था? जब वह जगत का न्याय करने को आएगा तो क्या आप उसके साथ

जाने को तैयार होंगे?

याद रखें, कि यीशु पहली बार इस जगत का उद्धारकर्त्ता बनकर पृथ्वी पर आया था। पर अब की बार वह न्याय करने के लिये आएगा। वह पृथ्वी पर नहीं आएगा पर वह ऊपर आकाश में बादलों पर आएगा। वह अचानक किसी भी दिन और किसी भी समय आ जाएगा। इसलिये हमें चाहिये कि हम उस की आज्ञाओं को मानकर और उन पर चलकर अपने आप को तैय्यार कर लें ताकि जब वह आए तो हम उसके साथ जाने को तैय्यार हों। क्या आप अभी तैय्यार हैं?

प्रभु के सामने आप कहां खड़े होंगे?

मेरे विचार में आप शायद उस मोची की कहानी से अवश्य ही परिचित होंगे जो अपनी आंखो से ईश्वर को देखना चाहता था। वह एक भला आदमी था। अनेकों बार प्रभु से प्रार्थना करके उसने कहा था, कि वह उसे देखना चाहता है। सो एक बार रात को जब वह सो रहा था, तो स्वप्न में प्रभु ने उस से आकर कहा था, कि कल मैं तेरे घर आऊंगा। सुबह वह मोची बड़े ही तड़के उठ गया और बड़े ही खुश होकर प्रभु के आने की प्रतीक्षा करने लगा। उसने कुछ पकवान बनाए और चूल्हे पर चाय का पानी रखकर वह अपने काम में लग गया। कि तभी किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। उसने झट से उठकर खुशी के साथ दरवाज़ा खोला, यह सोचकर कि शायद प्रभु ने द्वार खटखटाया है। लेकिन बाहर एक आदमी खड़ा था जो क़ाफ़ी थका हुआ नज़र आ रहा था। मोची ने उसे भीतर बुलाया और उसका हाल-चाल पूछा। उसने उस से कहा, कि मैं तीन दिन से भूखा हूं, क्या मुझे कुछ खाने को मिल जाएगा? मोची ने उसके लिये चाय बनाई और जो पकवान उसके पास थे वह उसने उसके सामने रख दिए। वह आदमी खा-पीकर उसे बहुत धन्यवाद देने लगा और कुछ देर बाद विदा लेकर वहां से चला गया। मोची फिर अपने काम में लग गया और प्रभु के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

उस दिन बहुत अधिक ठंड पड़ रही थी। और दोपहर होते होते अचानक घने बादल घिर आए थे और फिर बड़ी ही तेज़ बारिश होने लगी थी। मोची अपने कमरे में बैठा जूतियां गांठ रहा था, और मन ही मन सोच रहा था कि जब प्रभु उससे मिलने आएगा तो वह उससे क्या-क्या बातें करेगा। तभी उसे कुछ ऐसा लगा कि घर के बाहर आकर कोई खड़ा हुआ है। वह अपना काम

छोड़कर बाहर निकल आया, और उसने देखा कि एक औरत बारिश से बचने के लिए बरामदे में आकर खड़ी हो गई थी। उसकी गोद में एक छोटा सा बच्चा था और ठंड के मारे बच्चा और मां दोनों बुरी तरह कांप रहे थे। मोची को उन्हें देखकर उन पर बड़ी दया आई, और उसने औरत से पूछा कि इतनी तेज़ बारिश में वह अपने घर से क्यों निकली है। उस स्त्री ने मोची से कहा कि मेरा तो कोई घर ही नहीं है। मोची ने उसे घर के भीतर बुलाया और उसे बैठाकर उसके सामने अंगीठी रख दी। फिर उसने अपना कम्बल उन्हें ओढ़ा दिया और कहा कि इसे तुम्हीं ले लो। फिर उसने उस स्त्री से कहा कि तू बच्चे को दूध पिला दे, क्योंकि वह भूख से तड़प रहा था। उस ने कहा कि मैंने तो रात से कुछ भी नहीं खाया है, मैं इसे दूध कहां से पिलाऊं। तब मोची का दिल भर आया और उसने तुरंत उसके लिये चाय बनाई और उसके आगे पकवान रखकर कहा, कि तुम अच्छी तरह खा लो। जब वह खा-पी चुकी, तो उस ने अपने बच्चे को दूध पिलाया। कुछ देर बाद जब बारिश रुक गई, तो वह स्त्री मोची का बहुत-बहुत धन्यवाद करके वहां से चली गई। मोची फिर अपने काम में व्यस्त हो गया, और बार-बार सोचने लगा, कि प्रभु ने आने में बड़ी देर कर दी।

जब शाम हुई, तो उसे अपने घर के बाहर कुछ शोर सुनाई दिया। बाहर निकलकर उसने देखा कि केले बेचनेवाली एक बूढ़ी स्त्री एक छोटे लड़के को पकड़कर पीट रही थी। उसने उसके पास जाकर उस से पूछा कि वह छोटे मासूम बच्चे को क्यों मार रही है। उस बूढ़ी स्त्री ने मोची से कहा, कि यह लड़का चोर है; इसने मेरा केला चुराया है, मैं इसे पुलिस में दे दूंगी। मोची ने उस से कहा, कि ऐसा नहीं है, पर यह लड़का यतीम है, इसे शायद कोई कुछ नहीं देता है और इसीलिये उसने केला उठाकर खा लिया है। फिर उस ने अपनी जेब से पैसे निकालकर उस स्त्री को देकर कहा, कि इसे और

केले दे दो। जब सब कुछ शांत हो गया, तो वह मोची अपने घर में वापस आ गया।

जैसे-जैसे शाम रात में बदलती जा रही थी, मोची के मन में अनेकों प्रश्न उठ रहे थे। उसका पूरा विश्वास था, कि प्रभु उस से मिलने आएगा। पर अब तो रात बहुत अधिक होती जा रही थी। कुछ ही समय बाद वह ऊंघने लगा, और फिर गहरी नींद में सो गया। तभी उसने फिर स्वप्न में देखा, कि प्रभु उसके सामने खड़े हैं। सो उसने एकदम प्रभु से कहा, कि आपने तो मेरे घर में आने को कहा था लेकिन आप नहीं आए, मैं तो सारा दिन आप का इन्तिज़ार करता रहा। प्रभु ने उस से कहा, कि मैं आया तो था, क्या तू भूल गया? उस ने प्रभु से पूछा, कि कब? मैंने तो आप को नहीं देखा? प्रभु ने कहा, कि मैं तेरे पास दिन में तीन बार आया था। पहले बार मैं तेरे पास उस भूखे आदमी के द्वारा आया था, जिसे सुबह तूने भोजन खिलाया था। दूसरी बार मैं तेरे पास उस औरत और बच्चे के द्वारा आया था जिनकी तूने सहायता की थी। और तीसरी बार मैं उस यतीम लड़के के द्वारा तेरे पास आया था जिस पर तूने दया दिखाई थी!

इस कहानी से जो शिक्षा हमें मिलती है वह बिल्कुल साफ़ है। प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब वह जगत का न्याय करने को वापस आएगा तो, "सब जातियां उसके सामने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। और वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को अपनी बाईं और खड़ी करेगा। तब वह अपनी दहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुमने मुझे पानी पिलाया, मैं

परदेशी था, तुमने मुझे अपने घर में ठहराया। मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुमने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था तुम मुझ से मिलने आए। तब धर्मी उसको उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या प्यासा देखा और पिलाया? हम ने कब तुझे परदेशी देखा, और अपने घर में ठहराया, या नंगा देखा और कपड़े पहिनाए? हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीग्रह में देखा और तुझ से मिलने आए? तब वह उन्हें उत्तर देगा, कि तुम ने जो कुछ मेरे इन छोटे में से छोटे भाईयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया। फिर वह अपनी बाईं ओर वालों से कहेगा, हे श्रापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुमने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया। मैं परदेशी था और तुमने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, और तुमने मेरी सुधि न ली। तब वे कहेंगे, कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की? तब वह उन से कहेगा, कि तुमने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया वह मेरे साथ भी नहीं किया। और ये अनन्त दन्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।" (मत्ती 25:31-46)

आज हम में से हर एक के सामने यह एक बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रश्न है, कि जब प्रभु न्याय करने को आएगा, तो हम सब उसके सामने कहां खड़े होंगे? क्या आप उसके सामने खड़े होने को तैयार हैं?

प्रभु यीशु, जिस का सुसमाचार मैं आप को सुनाता हूं, इसी विशेष उद्देश्य को लेकर स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था। वह हम सब

को धर्मी ठहराने को आया था। और यह काम करने को उसने परमेश्वर की मर्ज़ी से सारे जगत के पापों को अपने ऊपर लेकर क्रूस के ऊपर मृत्यु दन्ड पाया था। उसने हमारे अपराधों को अपने ऊपर लेकर, हमारी जगह, हमारे अपराधों की सज़ा भुगती थी। पवित्र बाइबल कहती है, कि यीशु मसीह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। उसके ऊपर विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओं पर चलकर हम सब परमेश्वर के लेखे में धर्मी ठहर सकते हैं। वह आप के पापों का प्रायश्चित है? क्या वह आप का उद्धारकर्त्ता है? अगर आज पृथ्वी पर आप उसे स्वीकार करेंगे, तो वह भी न्याय के दिन स्वर्ग में आप को स्वीकार करेगा। पर अगर पृथ्वी पर आप उसका इन्कार करेंगे, तो वह भी उस दिन आप का इन्कार करेगा।

मेरी आशा है, कि इन प्रवचनों को पढ़कर आप निश्चय ही यह जान गए हैं कि परमेश्वर आप से प्रेम करता है, और वह आप को स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है। आपको अपने सारे मन से उसके पुत्र यीशु में विश्वास लाना चाहिए और सब पाप और अधर्म से अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये उसकी आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो वह आप का उद्धार करके आप को अपनी कलीसिया अर्थात अपने पवित्र लोगों की मंडली में मिलाएगा, और अगर आप अपने जीवन में अन्त तक उसके प्रति विश्वासी बने रहेंगे तो वह न्याय के दिन आप को जीवन का मुकुट और हमेशा की ज़िन्दगी देगा। (2 तीमुथियुस 4:8)।